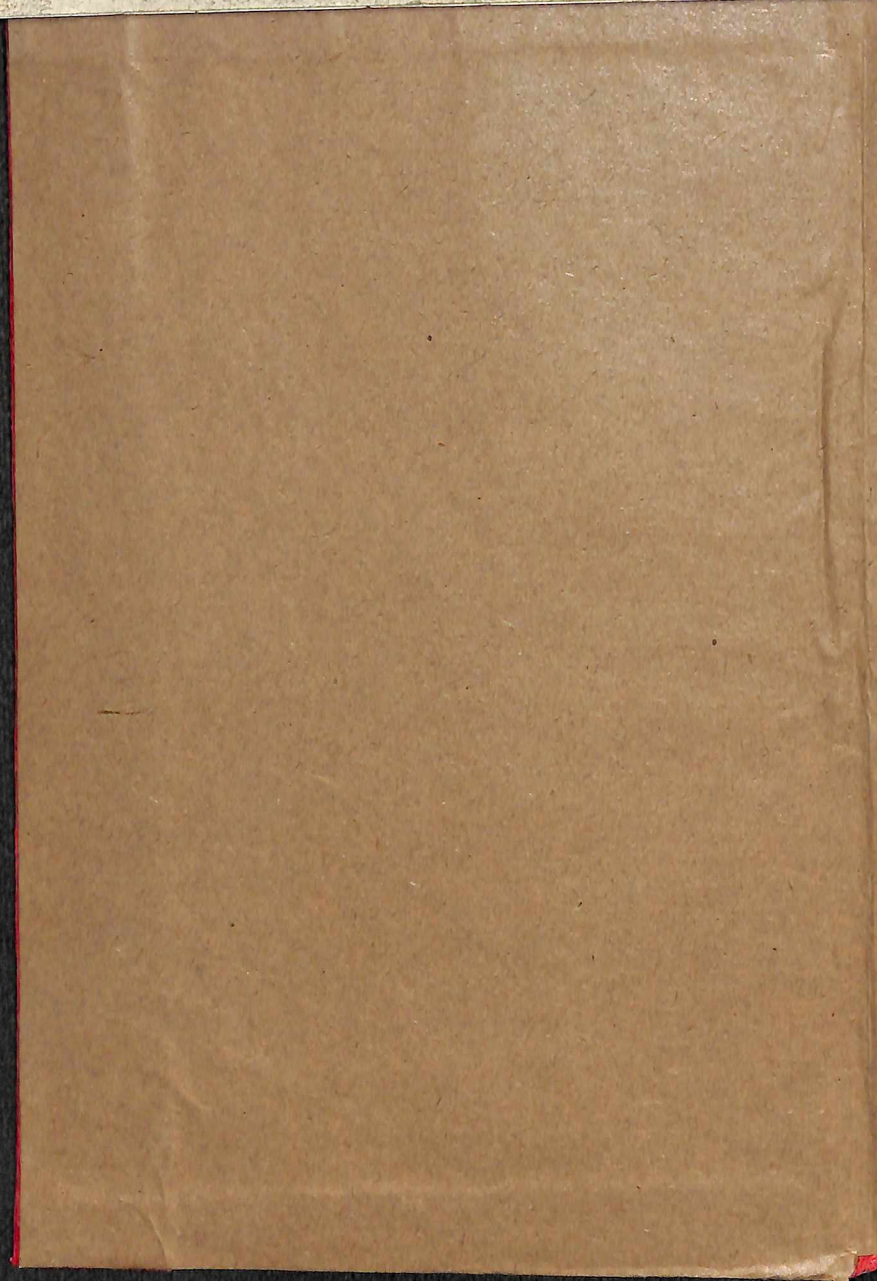
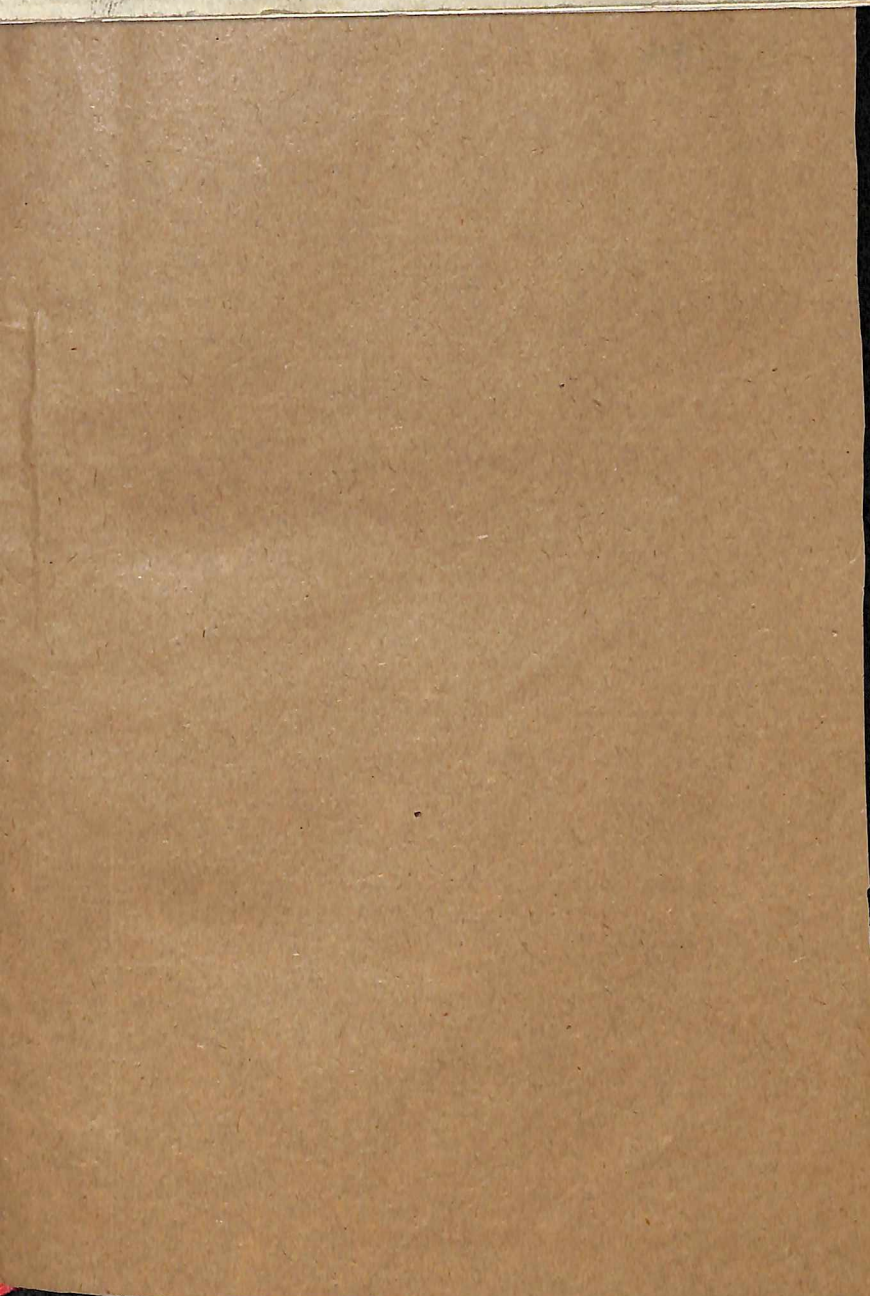


2140





E 140

उन्नीसवीं शताब्दी का महान् जरनैल

ज़ोरावर सिंह

मूल-लेखक

नरसिंहदास नरगिस

संपादक "चांद" जम्मू

अनुवादक

श्री हरिश्चन्द्र विद्यार्थी

चांद पब्लिशिंग हाऊस जम्मू

प्रकाशन के सर्वाधिकार चांद पब्लिशिंग हाउस जम्मू के पास सुरक्षित हैं

प्रथम संस्करण हिन्दी
नवम्बर 1965

मूल्य : 3.50 रु०

प्रकाशक :

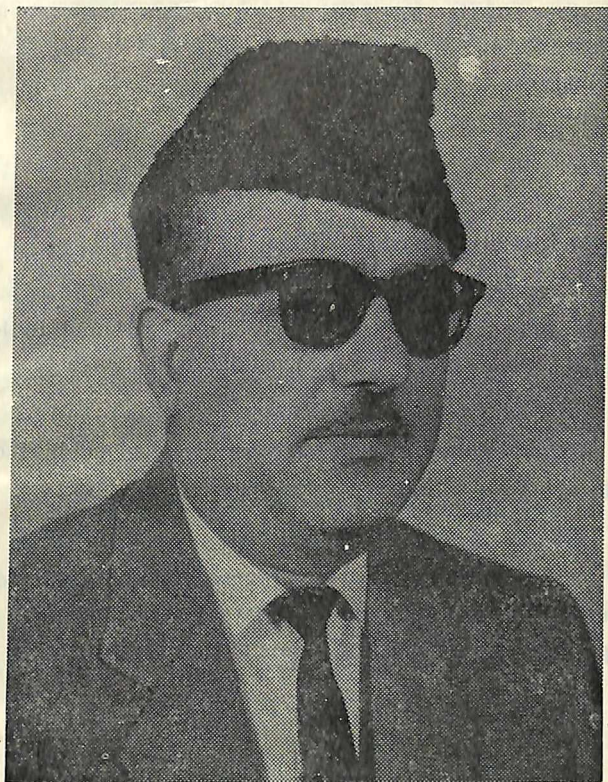
श्री इकबाल नरगिस जनरल मैनेजर

चांद पब्लिशिंग हाउस, गुमट गेट जम्मू

मुद्रक :

चांद प्रैस, जम्मू ।

ख्वाजा गुलाम मुहम्मद सादिक



मुख्य मन्त्री जम्मू-कश्मीर

PRIME MINISTER
JAMMU AND KASHMIR

No. 586/PM-64.

Srinagar

July 10, 1964.

Dear Mr. Nargis,

I am glad to have your letter of July 7, '64, and to learn about your book on the life of General Zorawar Singh Ji.

General Zorawar Singh was a great soldier and his heroic deeds will always form a glorious chapter of our history.

I hope the book which you propose to publish will provide a thorough study of the life of the late General and help in a proper understanding of the events of that period.

With good wishes,

Yours sincerely,

G. M. SADIQ

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में जम्मू-कश्मीर का डोगरा राज्य एक उपेक्षित और भूलाबिसरा अध्याय है। इस लिए इस राज्य के नर पुरुष—गुलाब सिंह, जोरावर सिंह, दीवान हरिचन्द—आदि—भी अज्ञानता और ऐतिहासिक उपेक्षा का शिकार हो गए हैं।

सुन्दर, खुशबूदार फूल सहारा में फूल कर मुरझा गए। उन पर किसी की दृष्टि ही नहीं पड़ी। मगर क्या उनके उत्तम फूल होने में भी कोई कमी है ?

यदि जोरावर सिंह को इतिहास लेखकों ने और शिक्षा विशारदों ने भुला दिया और उसे न ही भारती इतिहास और न ही स्कूली पुस्तकों में स्थान दिया तो क्या जोरावर सिंह की वीरता, देश प्रेम, बलिदान की भावना, उत्साह और धैर्य कम हो गए हैं ? उसके इन गुणों के उदाहरण देश के बच्चों के सामने न रखने से हमने जातीय नुकसान ही किया है।

भारत की उत्तरीय सीमा हिमालय की उत्तरी ढलानों से परे है। यह इस की कुदरती सीमा है। हिमालय की तपोभूमि का चप्पा-चप्पा भारत के इतिहास का परिचय देता है। जब भी भारत में राजसूय यज्ञ या अश्वमेध यज्ञ करके कोई राजा “इन्द्र पद” प्राप्त करने की चेष्टा करता रहा तो अपनी दिग्विजय में इसी सीमा तक पहुंचता रहा।

महाराजा रघु, सम्राट मानधाता, महाराज धर्मपुत्र युधिष्ठिर और उनके पश्चात आधुनिक इतिहासक काल में चन्द्र गुप्त मौर्य, आशोक, समुद्र गुप्त आदि की दिग्विजयों के वर्णन इस बात के साक्षी हैं।

गत शताब्दी में इसी परम्परा के अनुसार महाराजा गुलाब सिंह के जनैल जोरावर सिंह ने भारत की सीमा को मानसरोवर और कैलाश तक पहुँचा कर और इस प्रयत्न में अपने प्राणों की आहुति देकर वह काम कर दिखाया जो युग-पुरुषों का खासा है।

आज भी हमारी सेनाएं लड़ाख भी सदी में रह रही हैं, मगर उन के लिए हवाई जहाजों द्वारा खान-पान का सामान और साईंस तथा उद्योग के आधुनिक तम आविष्कारों से उपलब्ध सदी से बचने का सामान पर्याप्त मात्रा में प्राप्त है। सड़कें डाक-तार का सर्वोत्तम प्रबन्ध है, मन-बहलाव को रेडियो है, सुरक्षा के लिए टढ़ बंकर है, अपने बचाव के लिए अनु-आयुध हैं, भिन्न २ प्रकार के अस्त्र-शस्त्र हैं। मगर आज से सौ साल पहले—जोरावर के समय—इन में से कुछ भी न था। प्रयाप्त मात्रा में खान पान, वस्त्र भी न थे। सवारी के लिए टट्टू भी प्रयाप्त संख्या में न थे। बरफ-बारी का मुकाबला, जलवायु की सख्ती, शत्रु सर्वव्यापक-आगे, पीछे, दाएं और बाएं, घर दूर, घर के साथ सम्बन्ध का कोई संतोष-जनक प्रबन्ध न था—ऐसी परिस्थितियों में वीर योद्धा ने भारतीय झण्डा कैलाश पर फहरा दिया।

यदि कोई और देश होता तो ऐसे नर-पुरुष का नाम प्रत्येक नर नारी, बालक-बालिका की जवान पर होता। उसकी वीरता की गाथाएं लोक गीतों में और घर घर में गाई और सुनी सुनाई जाती।

डुगर देश वासियों तथा भारतीय जनता को 'दीवान नृसिंह दास नरगिस संपादक 'चांद' जम्मू' का आभार मानना चाहिए कि अपने असीम परिश्रम से भारत के इस वीर का जीवन चरित्र लिखकर इसके कृत्यों का समादर करने का भारतीय जनता को अवसर दिया है।

यह पुस्तिका उसी उर्दू पुस्तक का रूपान्तर है जो इस लिए तैयार किया गया है कि जाति अपने वीर का जीवन अपनी राष्ट्रभाषा में पढ़ सके।

हरिश्चन्द्र विद्यार्थी

जोरावर सिंह

अठारवीं शताब्दी का अन्तिम चरण :—

अठारवीं शताब्दी का अन्तिम चरण संसार भर में उत्थल पुत्थल का काल है। फ्रांसीसी क्रान्ति (1789) से सारे यूरुप में राजों महारजों के सिंहासन ढावां डोल हो उठे थे। भारत में मरहट्टों की बढ़ती हुई शक्ति को 1761 के तीसरे पानीपत के युद्ध ने रोक दिया था। भारत की प्रभुता के लिए हो रहे अंग्रेज-फ्रांसीसी संघर्ष का अन्त भी 1760 में हुआ। बंगाल जिसमें, बिहार और उड़ीसा भी सम्मिलित थे, अंग्रेजी धन-पिपासा का शिकार हो चुका था। सन् 1772-3 के अकाल में इस प्रदेश की लगभग एक तिहाई जनता काल कराल का भोजन बन चुकी थी। अवध का नबाब और दक्षिण हैदराबाद का नज़ाम अपनी शक्ति खो चुके थे। रामपुर के रुहेले और बनारस का राजा वारनहेसटिंगज की धन-पिपासा का शिकार हो चुके थे। टीपू सुलतान भी मैसूर में अपनी घड़ियां गिन रहा था। राजपूताना की राजपूत रियासतें खाना-जंगी और होलकर तथा सिन्धिया द्वारा अपना स्वत्व खो चुकी थीं। मुगल राज्य को अहमद-शाह दुरानी पद-दलित कर चुका था। अब मुगल सम्राट अंग्रेजों का वजीफा खार था या सिन्धिया का दया-पात्र। दुरानी के बार २ के आक्रमणों से पंजाब उजड़ चुका था। और सिख मिसलें अब अराजकता फैला रही थीं।

झुगर प्रदेश (कांगड़ा-जम्मू) की पहाड़ियों में स्थान स्थान पर छोटे छोटे राज्य स्थापित हो गए थे, जो परस्पर लड़ते रहते थे। प्रजा

त्रस्त थी। पूर्ण अराजकता का दौर दौरा था। जिसकी लाठी उसकी भैंस वाला मुआमला था।

जोरावर सिंह का जन्म और बचपन :-

ऐसे विकराल समय में बिलासपुर राज्य अन्तरगत कल्हूर ग्राम में एक राजपूत वंश में हमारे नायक जोरावर सिंह का सन् 1786 में जन्म हुआ था। यह नैपोलियन बोनापार्ट से 20/22 वर्ष पीछे पैदा हुआ और इतने वर्ष ही बाद मरा। इस प्रकार उसका सम सामयिक ही था।

माता पिता की अवस्था साधारण थी। अतः १६ वर्ष की आयु तक अपने ग्राम में साधारण ग्रामीण बालकों की भांती ही इसका भी जीवन व्यतीत हुआ। कांगड़ा के प्रसिद्ध ज्योतिषी गंगाराम ने बालक जोरावर को देख कर भविष्य वाणी की थी। कि यह बालक होनहार है। उसी ने इसका जन्मपत्र भी तैयार किया था।

ग्राम त्याग :-

अपनी १६ वर्ष की आयु में जोरावर सिंह एक घरेलू जमीन के भगड़े में फंस गया। भाइयों की परस्पर की लड़ाई में इसके हाथ इसका चचेरा भाई मारा गया। इससे यह घर से भाग गया और घूमता घूमता मेहनत मजदूरी करता हरिद्वार पहुंच गया।

राजा जसवन्त सिंह को सेवा में :-

राजा जसवन्त सिंह गल्यान व मरमत (तहसील डोडा) का सामन्त था। सन 1803 में अपनी राजगद्दी पर अपने पुत्र राजा फतहसिंह को बिठा कर यह तीर्थ-यात्रा पर चला गया। यह भी हरिद्वार में था। जोरावर सिंह इस के डेरा पर मजदूर का काम कर रहा था कि राना जसवन्त सिंह ने इसे देखकर पूछा कहां से आए हो।

जन्म स्थान वंश आदि का पता लगने पर उसने इसे अपना अरदली बना लिया और अपने पास रहने और साथ चलने की आज्ञा दी। इस प्रकार जोरावर सिंह गल्यान चला आया और वहीं रहने लगा।
गल्यान में जीवन :-

गल्यान का वायुमंडल क्षात्र-प्रधान था। यहाँ उसने हथियार चलाना, नेजाबाजी, तलवार, घुड़सवारी तथा अन्य हर प्रकार की क्षात्रोचित योग्यता प्राप्त कर ली।

शारीरिक व्यायाम में भी वह कुशल था। एक मन का भारी मुगदर एक हाथ से उठा कर देर तक खड़ा रख सकता था। यह मुगदर अब भी वहाँ मौजूद है।

गल्यान में ही एक साधु के सम्पर्क में आया। उससे कई योग आसन तथा अन्य क्रियाएं सीखी। उसी के प्रभाव से ब्रह्मचर्य की महिमा का ज्ञान इसे हुआ। और सारी आयु भर ब्रह्मचारी रहने का इसने निश्चय कर लिया।

सरल, कसरती और ब्रह्मचर्य के जीवन तथा भरपूर जवानी ने इसके ललाट पर तेज और ओज के चिह्न प्रगट किए। राणा फतह सिंह ने अपने वंश की एक कुमारी से इसका विवाह करना चाहा। मगर इसने न कर दी और ब्रह्मचर्य प्रण पर दृढ़ रहा।

शाह शुजाह से सम्पर्क :-

शाह शुजाह काबुल (अफगानिस्तान) का बादशाह था। बकरजई कबीला के विद्रोह से उसे राज-सिंहासन त्याग कर पंजाब भाग आना पड़ा। वह रणजीत सिंह की सहायता चाहता था। मगर रणजीत सिंह, बावजूद कोहनूर हीरा उससे ले लेने के, इस कार्य के लिए तैयार न हुआ। वह मुफ्त में दूसरों के भगड़ों में न पड़ना

चाहता था ।

सन् १८२५ में शाह शुजाह किशतवाड़ जाता हुआ रास्ता में गलियान-मरमत में खलयनी में दो सप्ताह ठहरा । राणा फतह सिंह ने जोरावर सिंह को उसकी आव-भगत के लिए नियत किया । जोरावर सिंह के स्वभाव व्यवहार और आतिथ्य से शाह शुजाह इतना प्रसन्न हुआ कि उसे एक कीमती तलवार इनाम दी । यह अब तक उसके वंशजों के पास पड़ी है । वह उसे अपने साथ किशतवाड़ ले जाना चाहता था, मगर जोरावर सिंह अपना बचपन और शिक्षा का स्थान छोड़ कर जाने को उद्यत न हुआ । और बात रह गई ।

वीर गोरिल्ला जरनैल डीडो से भेंट :-

डुंगर प्रदेश में डीडो का नाम ग्राम-ग्राम और घर-घर में प्रसिद्ध है । इसकी वीरता के गीत अब तक ग्रामों में गाए जाते हैं ।

इन्हीं दिनों अपनी पार्टी के साथ भद्रवाह जाता हुआ मियां डीडो खलयनी में ठहरा । राणा फतह सिंह की ओर से इसके आतिथ्य के लिए जोरावर सिंह नियत किया गया था । उसने इस वीर पार्टी की सेवा में कोई कसर उठा न रखी ।

खलयनी के पास पारस एक छोटा सा ग्राम है । इसमें प्रायः आबादी मेघ जाति के हरिजनों की थी । रात के समय इन लोगों ने जगरात किया, देवी की भेंटें (भजन) गाते रहे और प्रथा के अनुसार ढोल आदि बजाते रहे । गोरिल्ला तो सदा चौकस रहते ही हैं । डीडो की पार्टी ने समझा कि राणा फतह सिंह धोका करके अपने लोगों को आवाहन कर, हमें पकड़ना या मारना चाहता है । बस फिर क्या था । पार्टी खलयनी पर टूट पड़ी । और इसे जलाकर राख कर दिया । फिर आगे बढ़ गई ।

राणा फतह सिंह को सूचना मिली तो वह जोरावर सिंह पर

बहुत बिगड़ा। उसे नाराज हुआ और “कायर” तक कह दिया। जोरावर सिंह इसे सहन न कर सका और गलियान छोड़ कर चनैनी चला आया। चनैनी में राजा चाल चन्द राज करता था। उसका लड़का राजेन्द्र चन्द गलियान में ब्याहा था। जोरावर सिंह पहले भी कई बार यहां आया था और परिचित था। मगर चाल चन्द ने अपने सम्बन्धी की नाराजगी के कारण उसे अपनी सेवा में न रखा। अतः जोरावर सिंह जम्मू चला आया।

संसार के इतिहास में कई बार छोटी छोटी बातों के बहुत बड़े परिणाम हुए हैं। यही बात अब हुई। यदि हमारा नायक गलियान में ही रहता तो मरुभूमि के फूल की तरह वहीं जीवन-लीला समाप्त कर देता। जम्मू आने से उसके भाग्य का तारा चमका और उसे वह अवसर प्राप्त हुए कि वह अपनी आन्तरिक शक्ति का विकास कर देश और जाति में अपना नाम अमर करने में सफल हो गया।

गुलाब सिंह से भेंट :-

मियां गुलाब सिंह अभी ‘राजा’ न बना था। रणजीत सिंह महाराजा पंजाब, के पास नौकर था। अपने स्वभाविक गुणों, वीरता और योग्यता से वह रणजीत सिंह का विश्वास-पात्र सेवक था। इन दिनों वह अवकाश लेकर अपने घर जम्मू में आया हुआ था। उसका जीवन बहुत नियम पूर्ण था। प्रातः उठ कर तवी नदी पर स्नान करने जाया करता था। एक दिन स्नान करके, जल का लोटा हाथ में लिए रामनामा पढ़ने धौथली ढक्की पर से लौट रहा था कि उसे ढक्की में बैठा जोरावर सिंह मिल गया। जोरावर सिंह ने उसका विशाल ललाट, भक्तिभाव और चाल ढाल देखकर, अपने विनीत स्वभाव-

अनुसार प्रणाम किया ।

गुलाब सिंह ने भी उसका सडौल शरीर, उन्नत भाल और विनय-भाव देखकर उससे उसका परिचय पूछा । गुलाब सिंह ने पूछा, “तुम्हारा क्या नाम है ?” उत्तर मिला, “जोरावर सिंह” गुलाब सिंह ने हंसी से एक बात कह दी । कहा कि एक व्यक्ति का नाम जंग बहादुर था । वह रणक्षेत्र से भाग आया । लोगों ने उसे पूछा तो बोला कि मेरी माता मुझे जंग बहादुर भी कहती थी और खिशकू (भगौड़ा) भी कह कर पुकारा करती थी । क्या तुम भी ऐसे ही जोरावर सिंह तो नहीं हो ?

जोरावर सिंह ने संजीदगी से उत्तर दिया, “इसका पता तो समय और अवसर ही दे सकता है ।” गुलाब सिंह उत्तर से प्रभावित हुआ और उसे अपने साथ ले आया । डुंगर प्रदेश के दो वीरों की यह प्रथम भेंट थी ।

रियासी के किला में :-

रियासी का इलाकादार ‘मियां दीवानसिंह जमवाल’ जम्मू राज्य का पुशतैनी जागीरदार था । इस पर यह संदेह किया जाता था कि इसने जम्मू के राजा जीत सिंह की रानी (बिन्दराली) से षडयंत्र करके जम्मू के मदारलमहाम (प्रबन्धक) मियां मोटा को मरवा दिया था । इसी कुकृत्य के लिए महाराजा रणजीत सिंह ने उसे लाहौर बुलाया और वहीं कैद कर लिया ।

रियासी की जागीर भी जब्त कर ली गई और जागीर का नया पट्टा मियां गुलाब सिंह के नाम कर दिया ।

मियां गुलाब सिंह जम्मू में था । उसे लाहौर दरबार की आज्ञा मिली कि रियासी जागीर पर अधिकार करे । तदनुसार गुलाब सिंह रियासी गया और रियासी के किला भीमगढ़ पर अधिकार कर लिया ।

तालाब के किनारे पर लोगों को जमा किया गया। सब ने मियां गुलाब सिंह की अधीनता स्वीकार कर ली, और नज़राने भेंट किए।

गुलाब सिंह जम्मू से ही जोरावर सिंह को साथ ले गया था। यहां किले के रक्षक दल में सिपाही के तौर पर उसे भरती कर लिया गया।

रयासी में विद्रोह :-

रयासी का पुराना जागीरदार मियां दीवान सिंह लाहौर में कैद था। उसका बेटा भूपदेव सिंह, अरनास (जागीर रयासी) में था। उसने अपने आदमी इकत्रत कर मियां गुलाब सिंह के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। अरनास के किला पर उसका अधिकार था।

गुलाब सिंह भी इसके लिए तैयार था। भीम गढ़ से कुछ सिपाही साथ लेकर उसने किला अरनास पर आक्रमण कर दिया। भूपदेव भाग गया और गुलाब सिंह ने अरनास पर भी अधिकार कर लिया। इस आक्रमण में जोरावर सिंह साथ था। उसकी वीरता और समझ बूझ का गुलाब सिंह पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

रयासी के किला का अधिकारी दीवान अमीर चन्द नियत करके, और गढ़ की मुरम्मत की आज्ञा देकर मियां गुलाब सिंह वापिस लाहौर चला गया और अपनी ड्यूटी पर उपस्थित हो गया।

उधर भूपदेव भी अरनास से भाग कर लाहौर जा चुका था। कुछ दरबारी सरदारों से मिल कर, वह अपने पिता दीवान सिंह को कैद से छुड़ाने में सफल हो गया। दोनों बाप बेटा रयासी आ गए।

रयासी के आस पास अपने साथियों को जमा करके दीवान सिंह ने किला भीम गढ़ पर आक्रमण कर दिया। जागीर में भी गुलाब सिंह के विरुद्ध भावना को उभारा।

दीवान अमीर चन्द और जोरावर सिंह ने अपने सिपाहियों के

साथ किला की रक्षा की। मियां दीवान सिंह इसे सरन कर सका और तंग आकर वापस लौट गया।

गुलाब सिंह के पक्ष का मियां जवाहर सिंह, अपने कुछ सिपाहियों के साथ रयासी में से जा रहा था, जब दीवान सिंह ने उस पर आक्रमण कर दिया। इस की सूचना किले में पहुँची। जोरावर सिंह कुछ सिपाहियों के साथ जवाहर सिंह की सहायता को किला से निकल आया और दीवान सिंह पर पीछे से आ गिरा।

दीवान सिंह के बहुत से आदमी इस लड़ाई में मारे गए। शेष भाग गए। बाप बेटा दोनों भी जान बचा कर भाग गए।

रयासी में शान्ति स्थापित हो गई। लोग जोरावर सिंह की वीरता और वफादारी का गुणगान करने लगे।

यह सब सूचना मिलने पर गुलाब सिंह लाहौर से वापिस रयासी आया। उसके आने से पहले ही रयासी जागीर में शान्ति स्थापित हो चुकी थी। लोगों में जोरावर सिंह की वीरता की चर्चा थी। गुलाब सिंह भी यह जान कर प्रसन्न हुआ। और उसे न केवल इनाम दिया बल्कि उसकी रहायश के लिए नए मकान बनाने की भी आज्ञा दी।

जोरावर सिंह की समझ बूझ :-

जोरावर सिंह भीमगढ़ में एक सिपाही था। गुलाब सिंह की अनोपस्थिति में रयासी के विद्रोह के दबाने और रयासी जागीर में शान्ति स्थापन करने में जो भाग उसने लिया था, इसका प्रभाव इलाके के लोगों पर, दीवान अमीर चन्द किलादार और मियां गुलाब सिंह सभी पर था।

किला तथा जागीर सम्बन्धी सूचनाएं जम्भू पहुँचाने के लिए दीवान अमीर चन्द उसे प्रायः मियां गुलाब सिंह के पास भेजा करता था।

गुलाब सिंह का भी वह विश्वास पात्र बन चुका था। अतः कई बार वह उसे से अन्य विषयों पर भी बात चीत किया करता था।

इसी प्रकार की बातों में एक बार जोरावर सिंह ने मियां गुलाब सिंह को बताया कि राशन की जो प्रथा चालू है, उससे सरकार को काफी हानि होती है। चालू प्रथानुसार हर सिपाही को प्रतिदिन एक पक्का सेर आटा और तदानुसार ही अन्य चीजें दी जाती हैं। इतना राशन सिपाही खा नहीं सकता। अतः वह कम से कम अपने राशन का तीसरा भाग बाजार में बेच देता है। उचित प्रबन्ध से यह मात्रा बचाई जा सकती है। सरकार को इससे लाखों रुपया का लाभ होगा।

बात गुलाब सिंह की समझ में आ गई। उसने उसी समय जम्मू से उत्तर की ओर जितने भी किले थे, सब में राशन देने तथा इसके निरीक्षण का अधिकार उसे दे दिया।

सिपाही के रूप में जोरावर सिंह आया था, और निरीक्षक पद अधिकारी (अफसर) बन कर वापिस लौटा। गुलाब सिंह के और नज़दीक भी हो गया।

इस प्रबन्ध में उसकी कुशलता और वफादारी से मियां गुलाब सिंह उस पर बहुत प्रसन्न हो गया।

परिणाम स्वरूप जल्दी ही उसे किशतवाड़ का गवर्नर नियत कर दिया गया।

किशतवाड़ :—

किशतवाड़ एक उच्चसमभूमि (पठार) है। इसका तल समुद्र से ५४०० फुट ऊंचा है। इर्द गिर्द बरफानी ऊंचे पर्वतों से घिरा है। लगभग २००० फुट नीची घाटी में चिनाब नदी (चन्द्र भागा) बहती है। उत्तर पश्चिम से मड़वा नदी अपनी उपनदी छात्रू को साथ लिए यहां चिनाब

के साथ संगम बनाती है।

भूगर्भ विद्या विशारदों का विचार है, और राजतरंगिणी के लेखक ने भी लिखा है। कि अति प्राचीन काल में यहां देवदार वृक्षों का घना जंगल था। यहां भूंचाल बहुत आते थे। पर्वतों की उत्थल पुत्थल से यह जंगल तबाह व बरबाद हो गया। पानी का रस्ता रुक गया और यहां एक बंत्त बड़ी भील (जिसे गोवरधन सर कहते थे) बन गई। एक भूंचाल से पानी का बहाव रोकने वाला यह बांध ठाठरी के स्थान पर टूट-फूट गया और भील का पानी चिनाब नदी में गिर करबह गया।

पर्वतीय प्रदेश होने के कारण यहां जीवन काफी कठिन है। इस प्रदेश का नाम किशतवाड़ भी असल में कष्ट (कठिनाई) और वाड़ (स्थान) से बना है। कई लोग यह भी कहते हैं कि यहां किशटी (खुमानी) का जंगल था इस लिए इसका नाम किशतवाड़ पड़ गया।

इस प्रदेश में प्रचलित लोक गीत भी (जो नीचे दिया गया है) इस बात की साक्षी देता है कि यहां जीवन कष्टमय था।

गीत

कशटवाड़ कष्ट का भांडा, दिन को भूखा रात को ठांडा।
जो कोई आय जब वह जाय, वह है गोसाईं का भांडा॥

राजा मुहमद तेग़ सिंह :-

जब गुलाब सिंह जम्मू का राजा था, तब किशतवाड़ पर राजा मुहमद तेग़ सिंह का राज्य था। बादशाह शाह जहान के समय बग़दाद तिवासी एक मुसमान फकीर, सयद फख़रुलदीन किशतवाड़ आया और यहीं रह गया। उसके प्रभाव में आकर राजा तेग़ सिंह मुसलमान बन गया और अपना नाम मुहमद तेग़ सिंह रख किया।

सयद फखुरुलदीन और उसके लड़के सयद इसरारुलदीन की जयारत गाहें इस समय भी किशतवाड़ कसबा में स्थित हैं।

मुसलमान बन जाने से तेग सिंह की आदतों में कोई फरक न आया। बल्कि राजपूत और अन्य हिन्दू सामन्तों का जो प्रभाव उसे पड़ले बुरायों से रोकता था, उससे भी वह आजाद हो गया। शराब पीकर मस्त रहता। प्रजा पर अकथनीय अत्याचार करता। व्यभिचारी तो था ही। यथा राजा तथा प्रजा के कारण उसके राज्य में भी सामाजिक बन्धन ढीले पड़ गए और एक प्रकार की अराजकता सी फैल गई।

उसका वज़ीर लखपत योग्य व्यक्ति था। उसे भी इस ने पदच्युत कर दिया। उसने भी अपनी भलाई यहां से जम्मू चले जाने में समझी। अयोग्य, असमर्थ और अत्याचारी अफसरों के हाथों राज्य का प्रबन्ध और भी बिगड़ गया। प्रजा दुःखी हो गई। आस-पास के छोटे छोटे पहाड़ी राज्य इस पर ललचाई आंखों से देखने लगे और अपने राज्यों में इस प्रकार की बुरायों के फैलने के डर से चिन्तित हो गए।

गुलाब सिंह एक नीतिज्ञ राजा था। उसका ध्येय सभी छोटी छोटी स्वतन्त्र रयास्तों को समाप्त कर सारे पहाड़ी प्रदेश में एकता और सुव्यवस्था स्थापन करना था। किशतवाड़ की प्रजा की हाहाकार और अराजकता को भी वह समाप्त करना चाहता था। वज़ीर लखपत ने भी इस बात के लिए उसे प्रेरित किया।

परिणाम स्वरूप राजा गुलाबसिंह ने थोड़ी सी सेना ले कर, चनैनी के राजा घाल चन्द के साथ किशतवाड़ पर चढ़ाई कर दी। दरिया चिनाब को खलैनी स्थान पर पार कर दोनों राजे डोडा पहुंचे। राजा मुहमद तेग सिंह इनके नुकाबला का प्रबन्ध न कर सका, क्योंकि प्रजा

का एक भी व्यक्ति उसके साथ न था। वह भाग गया। राजा गुलाब सिंह ने बिना सेना के प्रयोग के ही डोडा पर अधिकार कर, किशतवाड़ राज्य को जम्मू राज्य में सम्मिलित कर लिया।

प्रजा ने आराम का सांस लिया। गुलाब सिंह ने वज़ीर लखपत की सलाह से इस प्रदेश के प्रबन्ध वे सुधार करने का निश्चय किया। और इस सारे काम को निबाहने के लिए अपने विश्वास पात्र जोरावर सिंह को वज़ीर का खिताब देकर किशतवाड़ का गवर्नर नियत कर दिया।

वज़ीर जोरावर सिंह, गवर्नर किशतवाड़ सन १८२२ से ३४ तक

सर्व प्रथम जोरावर सिंह ने इस प्रदेश के प्रबन्ध को सुधारने का प्रयत्न किया। राज्य नियमों की स्थिरता, और उनके पालन में दृढ़ता, और निस्वार्थ से सारे प्रदेश में शीघ्र ही शान्ति हो गई। प्रजा की भलाई की भावना और निष्पक्षपात ने उसे जनता का प्रेम-पात्र बना दिया।

गुलाब सिंह की नीति अनुसार जोरावर सिंह भी समझता था कि छोटे छोटे स्वतन्त्र राज्यों के पास सुरक्षा और सुप्रबन्ध के साधन नहीं जुट सकते अतः जनता की भलाई इसी में है कि एक सुसंगठित और दृढ़ राज्य की स्थापना हो। इसी भावना से प्रेरित होकर उसने आस-पास के कई छोटे छोटे पहाड़ी राज्यों को जम्मू राज्य का भाग बना दिया। इस से जनता सुखी हुई और उसका प्रभाव भी बढ़ गया।

लद्दाख और बलत्स्थान :—

लद्दाख और बलत्स्थान समुद्रतल से १२००० फीट ऊंचा पठार है। जिसके किनारों पर कराक्रम आदि पर्वत २५ से २८ हजार फुट तक आकाश की ओर उठ रहे हैं। इनकी चोटियां सदा बरफ से ढकी

रहती हैं। अतः यह अत्यन्त शीत प्रधान प्रदेश है।

पर्वतों से घिरे रहने के कारण यहां वर्षा बहुत कम होती है और जो कभी होती भी है उस में वेग इतना कम होता है कि खदड़ की चादर तक भी इस से नहीं भीगती।

इस पठार में से सिन्धु नदी बहती है। सारा प्रदेश बंजर सा है। कहीं-कहीं खेती योग्य भूमि पर खेती होती है।

इन हालात में आबादी बहुत कम है। प्रायः लोग मंगोल वंशी हैं। लद्दाख में अधिक लोग बौद्ध है और बलस्थान में अधिक लोग मुसलमान हैं।

लद्दाख को राजनैतिक अवस्था :—

सन १७८० में लद्दाख के बौद्ध राजा सिवांग नाम ग्याल की मृत्यु हो गई। उसके दो लड़के थे। बड़ा जैतन राजगद्दी पर बैठा। दस वर्ष पश्चात् सन १७९० में उसकी चेचक से मृत्यु हो गई। उस समय उसकी आयु २४ वर्ष की थी। संतान के अभाव से उसका छोटा भाई सीपाल जो हेमस मठ का लामा था, राजा बनाया गया। प्रथानुसार बड़े भाई की विधवा पत्नि भी उसकी पत्नि हो गई।

यह लामा राजा अत्यन्त आलसी, मंद-बुद्धि, प्रमादी और दुश्चरित्र तथा हठी और दुराग्रही था।

राज्य के पुराने कर्मचारियों और अफसरों को पसंद न करता था। अपनी तरह के व्यक्तियों से घिरा रहता था। युद्ध-कला से अनभिज्ञ भी था और कायर भी। अतः राज्य में अशान्ति, सुरक्षा का अभाव और जनता में कष्ट तथा रोष था।

उसकी कई बातें बहुत विचित्र सी थीं। रात को न आप सोता न कर्मचारियों को सोने देता। उन से प्रतिदिन मुचलके लिया करता। बारह घड़े पानी से हाथ धोता था।

प्रजा के कष्ट की उसे चिन्ता न थी। राज्य के कामों से भी वास्ता न था। केवल धन जमा करने और उन्हें महल बनवाने में रुचि थी।
मोरक्राफ्ट का आगमन :—

इस राजा के काल सन् १८२० में एक अंग्रेज मोरक्राफ्ट यहाँ आया और दो वर्ष व्यतीत कर सन् १८२२ में वापस चला गया।

बहुत सी भेंटा आदि दे कर, काफी समय व्यतीत करने पर राजा से भेंट कर सका। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की ओर से यहाँ एक किला बनाने की आज्ञा मांगी, जो राजा ने अस्वीकार कर दी। कहा जाता है कि राजा कम्पनी से सम्बन्ध स्थापित करना चाहता था, मगर कम्पनी इतनी दूर और अरक्षित प्रदेश से दूर ही रहना चाहती थी।

बाहरी आक्रमण और लूटमार :—

इस प्रकार की मंद अवस्था का बुरा परिणाम होता है। जब कोई प्रदेश अरक्षित हो और उसके अन्दर प्रजाजन कष्ट में और उपेक्षित हो तो परिणाम सदा ही भयानक होता है।

यहाँ भी यही हुआ। कुलू से आक्रमणकारी आए। सपित्ती पर इन लोगों ने अधिकार कर लिया। लहाख के कई ग्रामों को जला दिया। पशु आदि लूट कर ले गए।

यही हाल लाहौल वालों ने किया।

राजा ने इनका मुकाबला न कर स्थानिक लोगों से ही आशा की कि वह अपनी रक्षा का प्रबन्ध आप करें। वह इस में सफल न हो सकते थे। विशेष तौर पर जब राज्य शक्ति उनकी पीठ पर न हो। उनके घर बार लुटे, ग्राम जले और राजा ने भी उन्हीं को इस लिए दण्ड दिया कि उन लोगों ने आक्रान्ताओं को मार कर क्यों न भगा दिया।

आक्रान्ताओं ने जन्सकार पर भी आक्रमण किया। कई किले तोड़-फोड़ दिए। बहुत-सा माल-सामान पशु आदि लूट ले गए। लद्दाख के निचले भाग में स्थित सेना ने इनका विरोध किया मगर सफलता न मिली।

इसी तरह एक वर्ष पश्चात् मंडी और वारन सेना ने किशतवाड़ के रास्ता आक्रमण कर काफी लूट-मार मचाई। ग्राम जलाए और तबाह किए। लोगों को लूटा। मगर राजा बेपरवाह ही रहा।

महाराजा गुलाब सिंह की राजनीति :-

गुलाब सिंह जैसे बेदार मगज राजा से लद्दाख की इस प्रकार की अवस्था छुपी न थी। उस ने चाहा कि इस सु-अवसर से लाभ उठा कर भारत के इस भाग को भारत की सीमा के अन्दर कर लिया जाय।

मगर लद्दाख एक सीमा पर स्थित था। जन्ता बौद्ध थी। इसका धार्मिक और कुछ हद तक राजनैतिक सम्बन्ध तिब्बत से था। मंगोल वंशी दोनों थे। चीनी भी मंगोल वंशी हैं। हो सकता है कि लद्दाख पर बाकायदा आक्रमण बड़े जंग में बदल जाय। अतः राजनीति यह है कि प्रथम सब प्रकार की व्यवस्था कर ली जाय।

लद्दाख के इस ओर दो राज्य थे। रणजीत सिंह का राज्य और ईस्ट इण्डिया कं० का राज्य। रणजीत सिंह ने १८१६ में कश्मीर पर अधिकार कर अपने राज्य की सीमा लद्दाख में जोड़ दी थी। डोगरा पहाड़ी राजे जम्मू और कांगड़ा प्रदेशों में सभी एक प्रकार से उसकी अधीनता स्वीकार करते थे। अतः उसकी अनुमति लेना आवश्यक थी।

अंग्रेज कम्पनी भी चीन से व्यापार करती थी। उसे वह नाराज

न करेगी—यह भय था। कम्पनी की ओर से मोरक्राफ्ट लद्दाख का चक्र लगा गया था। अंग्रेज गवर्नर जनरल के इस विषय में क्या विचार होंगे और मोरक्राफ्ट की राजनैतिक रिपोर्ट क्या होगी इसका कुछ पता न था।

अतः कम्पनी के पदाधिकारियों की राय और राजनैतिक चाल देख लेना भी आवश्यक था।

रणजीत सिंह का तो गुलाब सिंह विश्वास-पात्र था ही उसके अधीन भी था। इस लिए जम्मू राज्य की सीमा का विस्तार तो सिख राज्य का ही विस्तार था। उसकी स्वीकृति शीघ्र मिल गई। यदि डोगरे अपना खून बहा कर और अपना धन, जन, व्यय कर महाराजा रणजीत सिंह का प्रभाव और प्रभु-सत्ता बड़ा दें तो उसे तो प्रसन्नता थी। वह अस्वीकार क्यों करता।

पोशीदा तौर पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी की राय भी मालूम करने की चेष्टा की। उनको लद्दाख का बहुत कम ज्ञान था। इस प्रकार के गैरआबाद प्रदेशमें—जहां कम्पनी के व्यापार का विस्तार न हो सकता था—कम्पनी को विशेष रुचि न थी। गुलाब सिंह उनका दोस्त भी था। यदि तिब्बत के साथ अपने दोस्त की सामा मिल जाये और अंग्रेजी तथा तिब्बती राज्यों के मध्य में एक अपना मित्र राज्य हो तो कम्पनी की नीति के अनुसार यह अच्छी बात थी। अतः उन्हें भी इस आक्रमण में कोई एतराज न था।

गुलाब सिंह को यह भी पता था कि अफीम का एक-अधिकार कम्पनी के पास था। वह इसे चीन में बेच कर बहुत लाभ उठाती थी। चीनी शासक अफीम का आयात बन्द करना चाहते थे। इस विषय को ले कर चीन और कम्पनी में अन्दर ही अन्दर काफी द्वेष भावना थी। इस लिए यदि चीन तिब्बत की सहायता को आया

तो कम्पनी चुप न रहेगी। गुलाब सिंह को उसकी सहायता स्वयमेव मिल जायगी। इन सब बातों पर विचार कर और आवश्यक पेश बन्द्यां कर, गुलाब सिंह ने लद्दाख पर आक्रमण करने का निश्चय किया और जोरावरसिंह को इस कार्य पर नियत कर उसे आवश्यक हिदायत दे दी।

इधर सूत और पुष्कम के राजा टिम्बस के राजा के विरुद्ध थे और उसका प्रदेश छीनना चाहते थे। यह सब लद्दाख के अधीन थे। टिम्बस के राजा ने लद्दाख के राजा से शिकायत की। मगर पुष्कम का राजा सीपाल का रिश्तादार था अतः टिम्बस के राजा की शिकायत सुनी न गई।

इस पर उसने जोरावरसिंह से सम्पर्क पैदा कर सहायता की याचना की। जोरावरसिंह इस अवसर से लाभ उठाना चाहता था। अतः गुलाब सिंह की आज्ञा प्राप्त कर उसने लद्दाख पर चढ़ाई की तय्यारी आरम्भ कर दी।

लद्दाख पर प्रथम आक्रमण :-

लद्दाख का रास्ता कश्मीर हो कर जाता था मगर कश्मीर उस समय महाराजा रणजीत सिंह के अधीन था। इस लिए उस रास्ता से डोगरा सेना न जा सकती थी। किश्तवाड़ से लद्दाख का रास्ता दर-असल पर्वतों और दरों में से पगडंडियों का रास्ता था। इस रास्ता से सेना ले जाना अपने आप में एक समस्या थी पर जोरावरसिंह ने इसी रास्ता से अपनी सेना सहित कूच कर दिया। उसके पास दस हजार सैनिक और अफसर थे। उसे कठिनाईयों का ज्ञान था, मगर उसे आत्म-विश्वास था। इसी मानसिक बल ने सेना का भी उत्साह बढ़ा दिया।

सन् १८३४ के आरम्भ में जोरावरसिंह ने किशतबाड़ से चढ़ाई आरम्भ की, ताकि आगामी गरमी की ऋतु में वह इस सरद प्रदेश को सर कर सको ।

उसने मड़वा, वाड़वन और जन्सकार पर्वतों को पार किया और पोरग पहुंच गया । यह लहाख का ही सीमावर्ती जिला था ।

सान्को का युद्ध :-

लहाख की ४००० सेना एक स्टोग निवासी नवयुवक की कमान में आगे बढ़ी । सैनिक ताड़दार भारी बन्दूकों से सुसज्जित थी । सान्को के स्थान पर युद्ध हुआ । इस युद्ध में ६ या ७ डोगरे सिपाही और लगभग ३० लहाखी मारे गए । रात के समय लहाखी सेना पीछे हट गई और खसी दर्रा के रास्ते शेरगोल की ओर चली गई ।

डोगरा प्रेना आगे बढ़ी । करतसी किला पर अधिकार कर लिया । जोरावर सिंह ने शगकार के किला पर भी कब्जा कर लिया और सूरू स्थान पर नया किला बना कर अपनी स्थिति और दृढ़ कर ली ।

लोगों ने अधीनता स्वीकार कर ली । जोरावर सिंह ने प्रति-घर चार रुपया लगान लगा कर, सारा प्रबन्ध अपने आदमियों के स्पर्द्ध कर दिया । सूरू किला में ३५ डोगरे सैनिक रख कर और सुरक्षा का प्रबन्ध कर जोरावर सिंह आगे बढ़ा ।

लंग कारतसी ले लेने के पश्चात् यह सेना पशक्यूम के मैदान में जा पहुंची ।

दूसरी मुठभेड़ :-

लहाख के राजा ने नौरोबसटनजन और बगाया नाम के अपने दो वजोरो को और सैनिक भरती करने पर नियत किया । जिन

जिलों से सेना अब तक न आई थी वहां से सेना मंगवाने का प्रबंध किया गया ।

उधर स्टोक के नवयुवक सेनापति ने इस सहायक सेना की प्रतीक्षा न कर अपनी ४००० सेना ले कर पुशक्यूम के मैदान में डोगरा सेना पर आक्रमण कर दिया । घससान का युद्ध हुआ । लदाखी भी जम कर लड़े । मगर अकस्मात् एक गोली लगने से लदाखी कमांडर मारा गया । इस से सेना इतनी हताश हुई कि पुशक्यूम पुल पार कर मोले और शेरगोल की ओर भाग गई । पार करने के पश्चात् पुल तोड़ दिया ।

डोगरा सैनिकों ने मशकों पर नदी पार कर भागती हुई लदाखी सेना का पीछा किया । बहुत से लदाखी सैनिक मारे गए और काफी संख्या कैदी बना लिए गए ।

जोरावर सिंह ने पुशक्यूम के खाली किला पर अधिकार कर लिया ।

सूरत किले पर अधिकार :-

डोगरा सेना ने आगे बढ़ कर सूरत के किला को घेरे में ले लिया । दस दिन तक इस पर गोलाबारी होती रही । अन्त को यह किला भी जोरावर सिंह के हाथ आ गया ।

इस प्रकार लदाख के एक बड़े माग पर अधिकार हो गया । जोरावर सिंह ने इसके प्रबन्ध के लिए अपने आदमी नियत कर दिए और रक्षा के लिए किले में सेना की टुकड़ी रख दी ।

इस आक्रमण में जोरावर सिंह के साथ जो अफसर थे उनमें से कुछ के नाम यह हैं :-

१. महता वसती राम किशतवाड़या ।

२. मिरजा रसूलबेग अवद्यान पुर (डोडा) ।

३. मियां राय सिंह ।
४. राना जालम सिंह ।
५. सिंह मलकोटया ।
६. मियां नोता ।
७. उत्तम सिंह पढ़यार ।
८. वजीर खवाजा भोंजा (किशतवाड़या) ।
९. इमाम मलक (मड़वा) ।
१०. सय्यद मदीन शाह ।
११. सरदार समदखान ।

करत्सी पर अधिकार :-

जोरावर सिंह ने भागती हुई लहाखी सेना का पीछा कर किला करत्सी पर भी अधिकार कर लिया । इसका प्रबन्ध भी सूरत के इलाका की तरह कर दिया गया ।

युद्ध का अन्तम मोरचा :-

राजा नमगेल सीपाल ने अपने सेना नायक मोरब सत्जन के अधीन नई सहायक सेना का संगठन कर, उसे डोगरा सेना को रोकने के लिए भेजा । इस सेना ने लंकर पर्वत से नीचे उतर कर, आस्ताना और व्यामाखोम्नो के मध्य में एक तंग घाटी में अपना मोरचा बना लिया । इसके नीचे दरया बहता था और ऊपर की तरफ एक सीधा पहाड़ था । इस मोरचा से लहाखी सेना को उखाड़ना कठिन और खतरनाक काम था । जोरावर सिंह ने दो दिन लगातार लड़ाई जारी रखी, मगर मोरचा टूट न सका । डोगरा सेना रुक गई ।

तीसरे दिन एक डोगरा सिपाही निधान सिंह अपने एक साथी सिपाही के साथ एक छोटी सी नाली के रास्ता, चुपके से, लहाखी मोरचा में घुस गया । बड़ी जान जोखों और हौसला का काम था यहां लहाखी सेना का कमान अफसर कालबन दोरजे नमगील सुफैर घोड़े पर चढ़ मोरचे में सेना का उत्साह बढ़ा रहा था । निधान सिंह

ने उसे देख, गोली का निशाना बनाया। वह जखमी होकर घोड़े से गिरा और मर गया। इस से मोरचे में भगदड़ मच गई।

दूसरी तरफ से जोरावरसिंह ने आक्रमण कर दिया। दस्तबस्ता लड़ाई आरम्भ हो गई। इस में लगभग एक हजार लहाखी अपने सेनापति मोरन सत्जन सहित पकड़ लिए गए। करीब १५०० जान बचा कर भाग गए। काफी बड़ी संख्या खेत रही।

इस पराजय ने लहाखियों की कमर तोड़ दी और वह अब केवल पीछे हटती चली गई और डोगरा सेना आगे बढ़ती गई।

पुष्कम पर अधिकार :-

आज-कल करगल में सुरू दरया के पुल के रास्ता कश्मीर से लहाख जा सकते हैं। उस समय यह पुल न था। कश्मीर और करस्ती से लहाख जाने के लिए, बज्रद के पास अन्दो पुल का ही रास्ता था जिस से लहाख जा सकते थे। लहाखी सेना इस प्रकार घबरा कर भागी थी, कि यह पुल भी तोड़ने की हिम्मत न कर सकी।

अब यह पुल टूट चुका है, मगर जोरावर सिंह ने जो पुल निधान सिंह द्वारा बनवाया था वह अब भी मौजूद है।

गयालपो भी बेखबर न था। उसने कालवन पंखापा के अधीन २००० सेना जोरावर सिंह को रोकने के लिए भेजी। पंखापा पुष्कम में डेरा डाले पड़ा था, जब उसे सूचना मिली कि डोगरा सेना पुल आन्दो पर पहुँच गई है।

पंखापा का घोड़ा :-

जोरावर सिंह की सेना को पुल के पार ही रोक देने के लिए पंखापा ने सेना को कूच करने की आज्ञा दी। वह आप इस प्रकार घबरा गया कि रस्से से बन्धे हुए घोड़े पर सवार हो कर उसे एड़ी

और चाबुक मार-मार चलाने लगा । उसे यह भी याद न रहा कि थोड़ा बन्धा हुआ है ।

इस प्रकार का जरनैल जोरावर सिंह का क्या विरोध कर सकता था । पुल पार कर डोगरा सेना ने बिना एक भी बन्दूक चलाए पुष्कम पर अधिकार कर लिया । लद्दाखी सेना पीछे हट गई ।

आज तक 'पंखापा का घोड़ा' कहावत के रूप में प्रचलित है । जब कोई घबराहट में व्यर्थ का भीष्ण प्रयत्न होता है तो इसे प्रयोग में लाते हैं ।

प्रथम दौर की समाप्ति और सन्धि की बात चीत :—

गरमी का मौसम व्यतीत हो गया था । सरदी बढ़ रही थी । जोरावर सिंह लद्दाख की सरदी आरम्भ होने से पहले ही वापिस किशतवाड़ चला जाना चाहता था ।

उधर लद्दाखी भी देख खुके थे कि वह डोगरा सेना को रोकने में अयमर्थ हैं । बार बार की हार ने उनकी कमर तोड़ दी थी । इस लिए राजा लद्दाख भी सन्धि का इच्छुक था ।

चुनांचि शान्ति स्थापना और परस्पर की सन्धि की बात चीत होकर यह तय पाया कि :—

१. लद्दाख का राजा जम्भू के महाराजा गुलाब सिंह की अधीनता स्वीकार करता है ।
२. वह नौ हजार रुपया वार्षिक कर दिया करेगा ।
३. लद्दाख का राजा पन्द्रह हजार रुपया युद्ध व्यय के रूप में देगा ।

उन्नीसवीं शताब्दि का महान् जरनैल



वज्जीर जोरावर सिंह



लद्दाख के हैडक्वार्टर लेह का एक दृश्य जो पहाड़ी पर स्थित पुराने महलों से दिखाई देता है ।

यह भी निश्चय किया गया कि जम्मू का राजा वार्षिक कर लेने के लहाख की अन्दरूनी बातों में हस्तक्षेप न करेगा। युद्ध-व्यय देने के लिए प्रत्येक घर पर कुछ कर लगाने की योजना बचाई गई।

सन्धि की बात चीत पूर्ण हो जाने पर दोनों और प्रसन्नता प्रगट की गई। जोरावर प्रसन्न था कि उसका उद्देश्य पूर्ण हो गया और लहाखी राज इस लिए कि युद्ध बन्द होने से उसके देश में शान्ति हुई।

रंग में भंग :-

अंग्रेजी में एक कहावत है कि पानी का प्याला होटों से लगा हो, तो भी जल पान करने तक कई दुर्घटनाओं के होने की शंका है। यहां यही कहावत पूर्णतया चरितार्थ हुई।

पहले लिखा जा चुका है कि राजा नगमेल सीसपाल को अपने बड़े भाई के मरने पर राज्य के साथ ही बड़े भाई का रानी (गया तमो) भी मिली थी। उस समय वह गर्भवती थी। इस गर्भ से सेवांग रफतन नाम का पुत्र पैदा हुआ। इसे छो-अनकसोल भी कहते हैं।

लामा धर्म में माना जाता है कि लहासा का बड़ा लामा कहीं न कहीं जन्म ले लेता है। उसका पता लगाने पर उसकी विशेष रूप से पालना और शिक्षा का प्रबन्ध होता है और समय आने पर वह लामा के राज सिंहासन पर बैठता है।

इस प्रथा के अनुसार लहासा के लामा डोबा नेगजन पंचम को विशेष प्रेरणा हुई कि गयालामो रानी से पैदा होने वाला सेवांग रफतन असल में लामा भलूद दरजे का अवतार है। फलतः गयाल शश सेवांग रफतन को हेमस और चमरे के गुम्फों में रख दिया गया। सारा बौद्ध जगत उसे अवतार, आगामी लामा और पवित्र पावन

मान कर पूजा करने लगा। ऐसी परिस्थितियों में वह क्रोधी, हठी और अयाश हो गया। न ही किसी के वश में था न अपने ही वश में।

इसकी माता—गयालमो—का भी यही हाल था। वह अपने देवर पति को कुछ न मानती थी।

जब सन्धि की शरतों का ज्ञान इन दोनों को हुआ तो यह माता पुत्र बिगड़ गए और राजा के शरतें मान जाने पर भी इन लोगों ने सन्धि-पत्र रद्द कर दिया।

पुनः युद्ध :-

सन्धि की शरतों के अनुसार जोरावर का जो प्रतिनिधि युद्ध-व्यय का रुपया लेने गया, उसे पकड़ लिया गया और डारक वड़ के पुल से नीचे दरिया में फेंक कर हलाक कर दिया गया।

लहाखी राजा ने अपने वचन को भंग कर अपने जरनैलों को आज्ञा दी कि जोरावर सिंह का सिर काट कर दरबार में लाएँ। वरना उनको दंड दिया जायगा। उधर और सेना भरती करने का प्रयत्न भी आरम्भ कर दिया गया।

सेनापति बंगाया ने चक्रदार रास्ता से डोगरा सेना पर अचानक पीछे से आक्रमण कर दिया। जो डोगरा सैनिक उनके हाथ लगे या जखमी होकर कैद कर लिए गए उन सबको दरिया में फेंक दिया गया।

वज्जीर जोरावर सिंह ने इस धोखा से हानि उठाकर भी अपने आपको सम्भाल लिया और जन्सकार तक वापिस चला गया।

लहाखी फौज का आक्रमण :-

सर्दी आरम्भ हो चुकी थी। राजा लहाख और उसके जरनैलों तथा सलाहकारों ने इस अवसर से लाभ उठाने का निश्चय किया। सारे प्रदेश से और सेना एकत्रित की गई और डोगरा सेना पर

आक्रमण करने की तैयारी हुई।

मगर जोरावर सिंह सब हालात समझता था। उसने लहाखी सेना को आक्रमण का अवसर न दे, स्वयं उन पर आक्रमण कर दिया। लहाखी अपनी भारी भरकम तोड़ेदार बन्दूकें तैयार ही करते रहे कि वह आक्रमण हो गया। २०० लहाखी सैनिक कैद कर लिए गए, बहुत से मारे गए और भागने वालों में से ४०० लहाखी सैनिक एक बरफ के पुल से गिर कर दरिया में बह गए।

तीन डोगरा सरदार और बीस जवान इस युद्ध में काम आए।

लहाखी सेना की पसपाई :-

यह देख लहाखी सेना पीछे हटी और मोलबे जाकर रुकी। इधर जोरावर सिंह आगे बढ़ कर पुनः पश्क्यूम जा पहुँचा और वहाँ से लेह की ओर कूच कर दिया। क्योंकि लहाखी सेना लेह की ओर भाग रही थी।

जोरावर सिंह का अभियान :-

लहाखी सेना और अफसर इस प्रकार हताश होकर भागे कि अपने पीछे के पुल तोड़ने में भी अपना समय न लगा सके।

आस पास सब ओर जोरावर सिंह का डंका बजने लगा। परिणाम यह हुआ कि :-

(१) पोरग के सरदार, जिन्हें सीपाल राजा ने कैदी बना लिया था, जोरावर सिंह के साथ मिल गए और लहाखी सेना का पीछा करने में सहायक हुए।

(२) लामा यूरा के लोग भयभीत होकर जरबू के स्थान पर, आकर जोरावर सिंह से मिले और अधीनता स्वीकार कर ली।

खच्चर, नकदी आदि भेंट लाए और अपनी वफादारी का विश्वास दिलाया।

जोरावर सिंह ने भी उनकी रक्षा का प्रबन्ध कर दिया।

(3) इसी प्रकार टंगमूसंग के लोग भी आए और दो घोड़े और कुछ नकदी भेंट कर अधीनता स्वीकार कर ली।

जोरावर सिंह ने इनकी रक्षा का प्रबन्ध कर इनको भय रहित किया।

(4) आगे बढ़ने पर ससपोला, नाईमू, और ली के सरदार भी भेंट ले लेकर उपस्थित हुए और अधीनता स्वीकार करके रक्षा का विश्वास लेकर अपने स्थानों को वापिस चले गए।

बलत्स्थान :-

जैसा पहले बताया जा चुका है, बलत्स्थान की जनता प्रायः मुसलमान थी और है। यहां का बड़ा नगर असकरदू है। प्रदेश भर में कई मुसलमान सरदार स्वतंत्र होकर अपना अपना राज्य चलाते थे। एक ही परिवार के होते हुए भी यह प्रायः परस्पर लड़ते-झगड़ते रहते थे। इस लिए प्रजा भी सुख-चैन से न रह सकती थी।

असकरदू में राजा अहमदशाह। तूलती में राजा अहमदखान। परकोता में राजा गुलाम शाह। खपलू में राजा दौलतखान। करस में राजा खुरम खान।

करतखशा में राजा शेर अलीखान। शफर में राजा हैदर खान। अन्दो में राजा अलीखान। अस्तूर में राजा जवार खां का राज्य था।

यह सब राजे परस्पर लड़ते-झगड़ते भी रहते थे और एक ही परिवार और खानदान के होने से आपस में सम्बन्धी भी थे।

उदाहरणार्थ राजा शेर अलीखान राजा अहमद शाह का भाई भी था और दामाद भी, मगर दोनों एक दूसरे के शत्रु। अहमदशाह के लड़के राजा शाह मुराद ने शेर अलीखान पर आक्रमण कर, उसके इलाका पर अधिकार कर लिया और उसे भागने पर बाध्य किया। मुराद शाह ने क़िता पर अधिकार कर शेरअली खान का सब धन माल लूट लिया। क़िता में खानदानी दरगाह को भी नहीं छोड़ा।

मुराद शाह की जल्दी ही मृत्यु हो गई। बलस्थान में भी उत्थल-पुथल हुई।

उधर राजा शेरअली खान भाग कर लद्दाख पहुँचा कि राजा से सहायता लेकर अपना राज्य वापिस ले। जब उसे जोरावर सिंह का पता चला तो उसने अपने दो आदमी—बजीर गुलाम हुसैन और मुन्शी फज़लअली को जोरावर सिंह के पास भेजा कि उससे सहायता प्राप्त करें। जोरावर सिंह ने इस शर्त पर सहायता देना मान लिया कि वह महाराजा जम्मू की अधीनता स्वीकार करें और वार्षिक कर दिया करें।

साथ ही उन दोनों प्रतिनिधियों को विश्वास दिलाया कि डोगरा सेना उनके राजा की हर प्रकार से रक्षा करेगी।

पुनः सन्धि वार्ता :-

शेर अलीखान से इस प्रकार की आशा जनक वार्तालाप का एक परिणाम यह हुआ कि उसने जोरावर सिंह और लद्दाख के राजा में सन्धि कराने में कार्य किया। और राजा को समझाया कि उसका भला जोरावर सिंह से सन्धि करने में है।

राजा गयालपू टंडफ नगमेल भी गत आठ मास के युद्ध में बार-बार देख चुका था कि डोगरा सेना से बर आना कठिन काम है।

उसकी सेनाओं को कई बार पराजित होना पड़ा था । उसके किसी भी जनरल को जोरावर सिंह का सामना करने की हिम्मत न थी ।

यह सब बातें सोच विचार कर उसने अपना एक विश्वस्त आदमी वजीर जोरावर सिंह के पास भेजा कि यदि उसे सुरक्षा का विश्वास दिलाया जाय तो वह स्वयं आकर वजीर से सन्धि की बातचीत करेगा ।

जोरावर सिंह ने संदेश वाहक द्वारा गयालपू को विश्वास दिलाया कि वह हर प्रकार से उसकी रक्षा और मान करेगा । उसकी इच्छा केवल यह है कि वह जम्मू राज के अधीन होकर रहे । उसे तंग करने का वजीर का कोई इरादा नहीं ।

जोरावर सिंह और गयालपू की भेंट और सुलह की शर्तें :-

इस प्रकार अपनी रक्षा का विश्वास प्राप्त कर, गयालपू राजा लहाख, बजगू के स्थान पर जोरावर सिंह से भेंट करने आया । जोरावर सिंह भी एक सद् सैनिकों के साथ तथा महता बस्ती राम को साथ लेकर, राजा से भेंट करने गया । राजा ने भी उसका उचित स्वागत किया ।

इस प्रकार दोनों ओर से मित्रता का वायुमंडल पैदा करने के प्रयत्न हुए । जिससे सन्धि की शर्तें आसानी से निश्चित हो गई :-

तदनुसार निश्चय हुआ कि :-

१. तमाम लहाखी कैदी तथा उनका सेनापति अस्तनजन छोड़ दिए जायें ।

२. लहाख में कोई किला डोगरा राजा न बनाएगा और न ही वहां अपनी सेना रखेगा ।

३. जम्मू राज का एक वकील राजा लहाख के दरबार में रहा करेगा ।

४. लहाख का राज्य जम्मू राज्य का एक भाग होगा ।

५. गयालपू राजा लहाख महाराजा गुलाब सिंह को अपना अधिराज मानेगा और अधीन रहेगा ।

६. महाराजा गुलाब सिंह भी गयालपू टंडरूक नगमेल को लहाख का राजा मानेगा ।

७. गयालपू २० सहस्र रुपया वार्षिक कर जम्मू राज्य को देगा ।

८. राजा लहाख ५०००० रुपया जंग के तावान के रूप में अदा करेगा ।

खजाना से केवल ३७ हजार कैश और ज्वाहरात निकले । शेष १३ हजार दो किशतों में देना निश्चय हुआ । ६००० एक मास बाद और ७००० चार मास बाद । निश्चय हुआ कि इन शर्तों की तसदीक लहाख में चल कर की जावे ।

तदानुसार जोरावर सिंह अपने कुछ सैनिक और महता वसती राम के साथ लहाख गया ताकि इन शर्तों को पक्का कर लिया जावे और इन पर अमल भी आरम्भ हो सके ।

एक दुर्घटना :-

जब जोरावर सिंह लहाख गया तो महल में राजा के साथ उसके लड़के छू ग़रुोल को उसने पहले-पहल देखा । यह लड़का युवराज भी था । इसके अड़यल स्वभाव का पहले वर्णन हो चुका है ।

अपने रिवाज के अनुसार जोरावर सिंह ने इस युवराज के सिर से एक सद रुपया वारना किया कि इसे गरीबों में बांट दिया जावे ।

युवराज ने भ्रम-वश इसे अपनी मान-हानि समझी और जोरावर सिंह पर आक्रमण करने को अपनी तलवार खेंच ली । जोरावर सिंह तो शान्त रहा मगर उसके सैनिकों के हाथ भी तलवारों पर जा पड़े ।

ऐसा प्रतीत होता था कि रंग में भंग पड़ जायगा । मगर राजा सब समझ गया । उसने जोरावर सिंह को शान्त किया । क्षमा मांगी

और युवराज को वहां से हटा दिया।

जोरावर सिंह के साथ वज्रगों में बातचीत में १० दिन लगे थे। और लेह में भी सन्धि के पश्चात् जोरावर सिंह चार मास तक रहा और फिर वापिस आ गया।

लद्दाखियों का पुनः विद्रोह :-

वजीर जोरावर सिंह, लद्दाख को जम्मू राज्य में सम्मिलित कर, और सन्धि के पश्चात् भी लेह में चार मास व्यतीत कर के वापिस जम्मू की ओर चल दिया। जम्मू में भी उसके स्वागत के लिए तैयारियां होनी आरम्भ हो चुकी थीं। उसका यश उससे पहले ही वहां पहुंच चुका था।

अपने एक प्रतिनिधि (सन्धि अनुसार वकील) मुन्शी दया राम को लेह में नियत कर वह अभी रंगदूम में ही पहुंचा था कि उसे सूचना मिली कि लद्दाख में पुनः विद्रोह हो गया है।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है रानों, गयालमो और उसका लड़का छू गफरोल सन्धि के विरुद्ध थे। जब तक जोरावर सिंह लेह में रहा तब तक तो यह लोग चुप रहे मगर जरनैल के जम्मू की ओर प्रस्थान करते ही इन माता-पुत्र तथा उनके साथियों ने सन्धि की शर्तों को मानने से इन्कार कर दिया। राजा ने बहुत समझाया पर उसकी पेश न गई।

रानी (गयालमो) ने प्रधान वजीर, कादवन पंथापा को आज्ञा दी कि वार्षिक कर और युद्ध-व्यय का शेष रुपया जम्मू न भेजा जाय। प्रान्त में सब स्थानों पर अपने आदमी भेज कर नई सेना भरती करना आरम्भ कर दिया। वकील दयाराम को पकड़ कर मरवा दिया गया। सेनापति को आज्ञा दी कि वजीर जोरावर सिंह का पीछा

करके उसको पकड़ कर लाया जाय या उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाय। जम्मू की अधीनता मानने से भी इन्कार कर दिया गया। पन्थि के पक्ष पोषकों को कैद कर दिया गया।

टिम्बस के जागीरदार नमगेल गयापा ने यह सब सूचना जोरावर सिंह को पहुँचा दी।

विद्रोह का दमन :-

जोरावर सिंह इस प्रकार का कुव्यवहार और राजविद्रोह सहन न कर सकता था। यह सूचना उसे रंगराम में मिली। वहाँ से उसने अपनी सेना को वापिस लेह की ओर कूच करने की आज्ञा दी। जन्सकार पहुँच कर उसने इस पर अधिकार कर लिया। जागीरदार को पदच्युत कर दिया। उसे छोटी सी जागीर देकर जन्सकार जिला को सीधा जम्मू राज्य में मिला दिया।

जमींदारों पर प्रतिघर साढ़ेतीन रुपया वार्षिक कर लगा कर, इस जिले का प्रबन्ध अच्छी तरह करने का प्रयत्न किया।

रास्ता में सूरों के स्थान पर लहाखी सेना से मुठभेड़ में बहुत से लहाखी मारे गए। उनके १३ विद्रोही नेताओं को पकड़ कर फांसी पर लटका दिया।

एक स्थानक आदमी (कामी फम साटा) ने उसे यहाँ से लेह जाने का छोटा सा रास्ता बताया। इसी कठिन रास्ता से ही वह केवल १० दिन में पुनः लेह के आस-पास जा पहुँचा।

राजा, रानी ग्यालमों और उसका पुत्र बू गफरोल अपने दरबारियों के साथ एक ग्राम "शै" में तमाशा देख रहे थे जब उनको जोरवार सिंह के वापिस पहुँच जाने की सूचना मिली। वह घबरा गए।

राजा गयालपू टंडरूफ तो पहले ही विद्रोह के विरुद्ध था। वह अपने दरबारियों को साथ लेकर जोरावर सिंह का स्वागत करने के लिए छजीत आ गया।

जोरावर सिंह ने बड़ी युवरानी के नाम से एक ग्राम माठ की आधी जागीर लगा रखी थी। शेष आधा जहरा खातून को जागीर के रूप में दे दिया गया।

लेकिन इसने और शादी कर ली और पुश्कम में अपने भाई के पास चली गई।

गयालपो टंडरूफ नमगेल :-

गयालपो स्वयं कुछ दरबारियों को साथ ले, जोरावर सिंह को छजोत में आ कर मिला। जो कुछ हुआ था उसके लिए क्षमा याचना की। अपनी विवशता का रोना रोया। जोरावर सिंह के पांव पड़ा आयांदा फिर कभी ऐसा न करने या होने देने का वचन दिया। जोरावर सिंह ने उसे विद्रोह और वकील दयाराम के कतल आदि के लिए बहुत शर्मिन्दा किया।

दूसरे दिन गयालपो के साथ जोरावर सिंह ससैन्य लेह में प्रविष्ट हुआ। राजा से नई मुहिम का तमाम खर्चा और पिछली दोनों किशतों का १३००० रुपया यकदम अदा करने की मांग की।

राजा के पास कैश था नहीं। उसने अपने जेवर तथा कीमती वरतन आदि बेच कर सब रुपया चुका दिया।

गयालपो मंद बुद्धि, अस्थिर वचन और परस्पर विरोधी बातें करता था। राज्य शक्ति को वह सम्भाल न सकता था। दोबारा विद्रोह हो चुका था और वह सन्धि करके भी विद्रोहियों के साथ रहा। इस प्रकार राज्य-संचालन के वह पूर्णतया अयोग्य सिद्ध हुआ।

वज्जीर जोरावर सिंह ने उसे गद्दी से हटा कर स्टोक में जागीर दे दी और वह वहां शान्ति से रहने लगा।

राज्य का अधिकार :-

राज्य का उत्तराधिकारी ब्रू गफरोल था, मगर वह विद्रोह करके, अपनी माता के साथ भाग गया था।

उसका लड़का केवल कुछ दिनों का था। प्रदेश में पहले ही गड़-बड़ थी, कुछ दिनों के बच्चे को राज्याधिकार देना मानों अराजकता को निमंत्रण देना था।

अतः जोरावर सिंह ने जनरल मेरूप सटनजन को गद्दी पर बैठा दिया। यह जनरल गयालापो का वज्जीर था। जनरल के रूप में यह जोरावर सिंह की कैद में रह चुका था। इसने उन दिनों सहायता भी दी थी। अतः आशा थी कि यह जम्मु राज्य का भक्त-सिद्ध होगा।

बज्रगो के कालवन सीवांग तोबदम को प्रधान मंत्री नियुक्त कर दिया।

जम्मु - राज्य का कर अठारह सहस्र रुपया वार्षिक नियत हुआ देश की रक्षा के लिए लेह के नीचे, सकरा के पास नाला संगतू के किनारे एक नया किला बनवा कर, उसमें तीन सौ डोगरा सिपाही रख दिए गए और इस सेना का अधिकारी दलील सिंह को नियत किया। दलील सिंह का पद थानेदार का था।

प डर पर अधिकार :-

लद्दाख में विद्रोह की सूचना मिलने पर जोरावर सिंह तो कामी फस साटा के बतलाए हुए, एक तंग और छोटे रास्ता से लद्दाख की ओर बढ़ गया था।

उस समय उसका विचार पाडर पर अधिकार कर, लहाख और जम्मू का दूसरा रास्ता खोलने का था। इस काम पर उसने वजीर लखपत किशतवाड़या को नियुक्त कर दिया। वजीर लखपत ने पाडर पर अधिकार कर इसे जम्मू राज्य का अंग बना दिया।

पोरग में विद्रोह और उसका दमन :-

जब लहाख में विद्रोह हुआ तो सारे प्रदेशों पर इसका प्रभाव पड़ा। पोरग के लोगों में यह बात फैलाई गई कि लहासा से बहुत बड़ी सेना गयाल्यों की सहायता के लिए आ रही है। जोरावर सिंह इसका सामना न कर सकेगा।

इसे सु-अवसर जान पारेग में प्रायः सभी राजों और जागीरदारों ने विद्रोह कर दिया।

सोत के राजा ने छूबरखर के किला पर अधिकार कर, डोगर सैनिकों को मरवा दिया।

चौकी छूबरखर तथा सोरो के गिर्द भी घेरा पड़ गया।

अभी जोरावर सिंह सोरो से जन्सकार न पहुँचा था, जब यह विद्रोह खड़ा हो गया और सारे इलाका में फैल गया।

इसकी सूचना जोरावर सिंह को लामा पूख पहुँचने पर मिली। वह वही से सेना सहित पुश्कम पहुँच गया और विद्रोह को दमन करने में लग गया।

पोरग के राजाओं की जागीरें अधिकृत कर ली गईं।

तकचा के राजा रहीम खान, बाखा के राजा अहजमखान, पुश्कम के राजा सलाम खान तथा सोत और टिम्बस के राजों की जागीरों पर भी सरकारी अधिकार कर लिया गया।

इस सारे इलाके का अधिकारी रहीमखान को जोकि मुहम्मदअली का भाई था और जिसने पहले जोरावर सिंह की सहायता की थी,

नियत किया गया और उसके पद का नाम "कालवन" रखा गया ।

जम्मू को वापसी :-

लहाख विजेता वजीर जोरावर सिंह विजित प्रदेश का प्रबन्ध करके तथा वहां के विद्रोह की शक्ति को तोड़ कर, जम्मू वापस हुआ । पहले बताया जा चुका है, कि वजीर लखपत किशतवाड़िया ने पांडर का इलाका जम्मू राज्य में मिला लिया था । अतः वापसी का रास्ता जन्सकार-पांडर प्रयोग किया गया ।

जम्मू में जोरावर सिंह की प्रतीक्षा देर से की जा रही थी । उसका नाम लोग अभिमान से लेते थे । महाराज गुलाब सिंह के दिल में उसके लिए विशेष मान था । जम्मू आने पर उसके स्वागत को राज्य का दीवान स्वयं आगे आया । दरबार में उपस्थिति के समय महाराज गुलाब सिंह ने सिंहासन से उठ कर, उसे गले लगाया और उसका वीरोचित मान किया ।

एक विशेष सरकारी आज्ञा प्रकाशित की गई कि लहाख विजेता वीर जोरावर सिंह को "जै देवा" कह कर सम्बोधन किया जाया करे ।

उस समय यह सम्बोधन केवल राजा तथा शाही खानदान के व्यक्तियों के लिए ही प्रयोग होता था । इस प्रकार जोरावर सिंह का पद शाही खानदान वालों के समान कर दिया गया ।



जम्मू में पांच वर्ष :-

जम्मू राज्य में अब उसका पद महाराज के अत्यन्त निकट के व्यक्तियों में था । उसकी वीरता, कार्य-कुशलता, स्वामी भक्ति और निस्वार्थता पर महाराजा गुलाब सिंह बहुत प्रसन्न था और उसके साथ आत्मीय-जनों जैसा ही व्यवहार करता था ।

आगामी पांच वर्ष जोरावर सिंह जम्मू में रहा और राज-कार्य में विश्वास-पात्र बना रहा। इस अरसा में रियासी, बुधल, राजौरी और पुन्छ के प्रदेश उसके अधीन रहे।

उसने राजा की सेवा करते हुए भी यथा शक्ति जनता को हर प्रकार का सुख देने की चेष्टा की।

लद्दाख में पुनः विद्रोह :-

जोरावर सिंह ने लद्दाख में मौरूप सटनजन को राजा (गयालपो) बना कर सारा प्रबन्ध उसके हवाले किया था। लगभग दो वर्ष तो उसने बहुत अच्छी तरह कार्य किया। तत्पश्चात् विषय-भोग में मद-मस्त हो गया। पुश्कम की एक सुन्दरी से नया विवाह कर, मोरचा-बाग में विशेष महल बनवा कर भोग-विलास में समय व्यतीत करने लगा।

इसका परिणाम यह हुआ कि प्रबन्ध में शिथिलता आ गई।

कश्मीर का सिख गवर्नर मियां सिंह, गुलाब सिंह की बढ़ती हुई शक्ति के कारण उससे द्वेष रखता था। उसने भी अपना एक विशेष आदमी फतह सिंह लद्दाख की ओर भेजा कि वहां विद्रोह करा कर, गुलाब सिंह की शक्ति को कमजोर कर दिया जाय। इसे, अपनी इस चाल में कुछ सफलता मिली भी।

पोरग के सारे प्रदेश का प्रबन्ध जोरावर सिंह ने रहीम खान को दिया था। फतह सिंह ने उसे सिक्खों की सहायता का विश्वास दिला कर विद्रोही बना दिया। वह सटनजन के पास गया कि दोनों मिल कर डोगरों से स्वतंत्र हो जायें। उसने सटनजन को सलाह दी कि वह तिब्बत से सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न करे। इस प्रकार का षडयन्त्र रच कर और कश्मीर, लद्दाख, पोरग, अस्कर्ट धुरा

बना कर कार्य आरम्भ कर दिया गया ।

पोरेग में डोगरा थानेदार निधान सिंह जो दरास और करगल का इनचार्ज था, को तथा उसके सिपाहियों को मार दिया गया ।

लहाख व पोरेग से जो नजराना मालया व जम्मू भेजा जाता था, बन्द कर दिया गया ।

लहाख के थानेदार दलील सिंह के साथ भी अभद्र और अनुचित व्यवहार किया जाने लगा ।

इस प्रकार के हालात की सूचनाओं से हौमला प्राप्त कर चम्बा ने भी पाडर पर पुनः अधिकार कर लिया और जो डोगरा सैनिक वहां थे, उनको मृत्यु के घाट उतार दिया ।

इस प्रकार सूचनाएं मिलते ही सन् १८३८ के अन्त में जोरावर सिंह ने तीसरी बार लहाख की ओर कूच कर दिया ।

किशतवाड़ के रास्ता पहले वह पाडर पहुंचा । विद्रोहियों का दमन किया । उनका किला, छत्रगढ़, तोड़ कर बरबाद कर दिया गया । अपना एक नया किला "गुलाब गढ़" बनाया और उसमें सेना की एक टुकड़ी नियुक्त कर पाडर का प्रबन्ध सम्भाल लिया ।

वहां से वह वापिस किशतवाड़ चला आया ताकि मौसम अच्छा हो जाने पर वह जन्सकार के रास्ता पुनः लहाख पर आक्रमण कर सके ।

लहाख की अवस्था :-

मौरुप सटनजन को जब यह सूचना मिली तो वह लहाख छोड़ सपिती की ओर भाग गया । जोरावर सिंह को भी उसकी चाल का पता चल गया । उसने सेना की टुकड़ी उसका रास्ता रोकने के लिए रवाना कर दी । फलता सटनजन रास्ता में ही पकड़ा गया और काबू से पुनः लेह लाया गया ।

सन् १८४० की बसन्त ऋतु में जोरावर सिंह पुनः लेह पहुँचा ।

उसने सटनजन को गद्दी से उतार दिया। उसे किला में कैद कर दिया।

मियां मगना को थानेदार नियत कर, लहाख को जम्मू के साथ मिला दिया। प्रबन्ध में सहायता के लिए अपनोर गजन (गोबिन्द राम) को कालवन (मंत्री) नियत कर दिया।

राजपद पर पुनः नगमेल को आरूढ़ कर, नाम मात्र का राजा उसे बना दिया और उसके महल भी उसे वापिस दे दिए गए।

इस प्रकार लहाख पुनः जम्मू की अमलदारी में आ गया और वहां का विद्रोह शान्त हो गया।

असकरदू को विजय :-

बलस्थान की रानैतिक तथा सामाजिक अवस्था और मुस्लिमान राजों के परस्पर के लड़ाई झगड़ों का हाल पहले बताया जा चुका है। राजा शेर अली अपना राज्य वापिस लेने में सहायता पाने के लिए जोरावर सिंह को मिला भी था और उसे कुछ शर्तों पर सहायता का वचन भी दिया गया था।

मगर उस समय जोरावर सिंह वापिस जम्मू आने को तैयार था। लहाख के विद्रोह दमन में उसकी सारी शक्ति लग रही थी अतः इच्छा होते हुए भी वह असकरदू न जा सका।

जम्मू आने पर उसने महाराज गुलाब सिंह से बलस्थान को जम्मू राज्य में सम्मिलित करने की आज्ञा मांगी। गुलाब सिंह ने उसे महाराजा रणजीत सिंह के पास भेज दिया। महाराज रणजीत सिंह इस बात के हक में न थे। अतः यह बात वहीं रुक गई, क्योंकि गुलाब सिंह कोई ऐसा काम न करना चाहता था, जिसमें रणजीत सिंह की सहमति न हो।

महाराजा रणजीत सिंह १८३६ में स्वर्ग सिद्धार गए। उनके पश्चात् उनका लड़का खड़क सिंह गद्दी पर बैठा। उसका लड़का नैनिहाल सिंह

योग्य नवयुवक था। अंग्रेज कम्पनी की सैनिक शक्ति और ज्यादात्यों से वह जुबुन था और चाहता था कि पर्वतीय रास्ता से नैपाल के साथ सम्बन्ध कायम हो। मगर उसकी मृत्यु से सभी योजनाएं धरी धराई रह गईं।

महाराज रणजीत सिंह, खड़क सिंह और नैनिहाल सिंह की मृत्यु और पंजाब की राजनैतिक परिस्थितियों ने गुलाब सिंह और जोरावर सिंह को बलस्थान पर आक्रमण करने के लिए एक प्रकार से, स्वतन्त्र कर दिया। और वह अपनी योजना अनुसार कार्य में आगे बढ़े।

बलस्थान की अवस्था :-

बलस्थान में प्रधान नगर असकरदू था। यहां राजा अहमद शाह राज्य करता था। उसका लड़का मुहमद शाह था। पिता के साथ उसकी न बनती थी। पिता ने उसे राज्य के उत्तर अधिकार से च्युत कर दिया था। अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए उसने जोरावर सिंह की सहायता मांगी। जोरावर सिंह ने भी यह अवसर अच्छा जान कर सहायता का वचन दे दिया।

पोरेग में सकमेर नामी एक व्यक्ति ने लोगों को डोगरा राज्य के विरुद्ध भड़का कर विद्रोह खड़ा कर दिया था। अतः जोरावर सिंह को यह काम भी करना था। उसने सकमेर और दूसरे विद्रोहियों को उचित दंड देकर, विद्रोह का दमन किया। पोरेग को जन्मू राज्य में मिला कर, करगल, दरास और सोरो में अपने थानेदार तथा कुछ सैनिक नियुक्त कर दिए। इस से बलस्थान का रास्ता साफ हो गया और पीठ पीछे खतरा न रहा।

असकरदू पर आक्रमण :-

जोरावर सिंह के पास डोगरा सेना थी ही। उसने अपने अफसरों की सहायता से लड़ाखियों को भरती करके ५००० की एक लड़ाखी

सेना भी तैयार कर ली ।

इन दोनों सेनाओं के साथ बलस्थान पर १८४० में मार्च कर दिया गया ।

लहाखी सेना भी डोगरा अफसरों के अधीन थी । यह हनोला--छोड़ाबट--खवलू के रास्ता से चली ।

डोगरा सेना को अपनी कमान में लेकर जोरावर सिंह गरकोनों के रास्ता बलस्थान की ओर बढ़ा । यह रास्ता मरोल और खरमंग हो कर जाता था । उसने दरिया सिन्ध को गरकोनों के पास से पार किया और सोत के सपरी पहुंच गया ।

परेग प्रदेश से भी एक सेना तैयार करके उसने अपने साथ ले ली और आगे बढ़ा ।

सपरी खर से पहाड़ पार कर वह चे, चे पंग में उतर कर असकरदू की ओर जाने की तैयारी करने लगा ।

असकरदू का राजा अहमद शाह भी तैयारी में लगा था । जोरावर सिंह के आक्रमण की सूचना पाकर उसने दोनों रास्तों को रोकने का प्रयत्न किया । लगभग २०,००० सेना तैयार करके वह मुकाबले के लिए तैयार हो गया ।

चे. चे पंग, जहां जोरावर सिंह की सेना का कैम्प था के मराल से तीन मील ऊपर एक मैदान में उसने अपनी सेना जमा की । जोरावर सिंह का रास्ता इसी मैदान के पास से गुजरता था । इसी के पास दरिया सिन्ध को पार करने का पत्तन था । एक तरफ दरिया सूरों का सिन्ध से संगम है और दूसरी ओर यह मैदान ।

चे. चे पंग से इस मैदान की ऊंचाई पर चढ़ने के लिए दरा वांकू हैं । इस में भी अहमद शाह की सेना ने मोरचे बना कर रास्ता रोक लिया । यहां नीचे शकम दरिया के कारण रास्ता नहीं है ।

इस प्रकार जोरावर सिंह के पहुँचने से पहले ही सब रास्ता रोक कर अहमद शाह ने एक प्रकार से नाका बन्दी कर दी थी। फलतः जोरावर सिंह के लिए आगे बढ़ना एक बड़ी कठिन समस्या थी।

चे. चे. पंग में जोरावर सिंह १५ दिन ठहरा और आगे बढ़ने की योजनाएं बनाता रहा। इधर सर्दी बढ़ गई और खुराक की भी कमी हो गई। इस से सेना में हल चल होने लगी।

मगर जोरावर सिंह तो कठिनाईयों का सामना करने के लिए ही पैदा हुआ था। घबराना उसे आता ही नहीं था। उसके धैर्य, सूझ बूझ और उत्साह ने सेना का हौसला बढ़ाने में सहायता दी।

कठिनाई का हल :-

एक रात एक दस्ता सेना, महता बसती राम की कमान में दरिया सिंध पर जरा ऊपर खड़ी कर दी गई कि पार जाने का रास्ता तलाश करे। दरिया जमा न था। उसे पार करना मुश्किल था, खास कर जब शत्रु की गोलियों का सामना भी था।

गरकोनों में दरदी लोग रहते हैं। इनमें से कुछ लोग सहायता को आगे बढ़े। रात के अन्धेरे में बहते हुए दरिया सिंध में लकड़ी की कुछ बलियाँ दरिया की धारा में गाड़ दी गई। बर्फ के टुकड़े इन से रुक कर इकट्ठा होने लगे। थोड़े समय में दरिया पर बर्फ जम गई और बर्फानी पुल तैयार हो गया।

महता बसती राम अपनी सेना की टुकड़ी के साथ इस बर्फ के पुल से, रात के अन्धेरे में ही दरिया के पार हो गया।

दरा वांकू पर आक्रमण :-

रास्ता बनते ही जोरावर सिंह ने और सेना भी इस पर से पार कर दी। अहमद शाह की सेना को पता तब चला जब डोगरा सेना

ने उनके मोरचों पर आक्रमण कर दिया। दस्तबस्ता युद्ध छिड़ गया। बहुत से बल्ती मारे गए। डोगरा सेना ने सूर्योदय के साथ ही दरा वाकू से शत्रु सेना को मार भगाया और इस पर अधिकार कर लिया।

अब रास्ता साफ हो गया। जल्दी ही अहमद शाह के कैम्प पर भी आक्रमण हो गया।

थामूखून ईथंग का युद्ध :-

अहमद शाह की सेना ऊंची पहाड़ी पर के मैदान में थी। अतः नीचे से, वांकू दरा में से आगे बढ़ने वाली डोगरा सेना पर इनका वार आसानी से चलता था।

यहां भी जोरावर सिंह की सूझ बूझ काम आई। एक पेचदार पहाड़ी पगडंडी से सेना की एक टुकड़ी को जोरावर सिंह ने पहाड़ी के ऊपर चढ़ा दिया। इस सेना ने परिस्थिति को उलट दिया। यह ऊपर से अहमद शाह की सेना पर गोलियां चलाने लगे। परिणाम यह हुआ कि बल्ती सेना को मोरचों से बाहर आना पड़ा। इतने में जोरावर सिंह की सेना दरा वांकू से ऊपर चढ़ आई।

ऊंचे मैदान में घमसान का युद्ध हुआ। दस्तबस्ता तलवार की लड़ाई में डोगरा सेना का मुकाबला आसान काम न था। बहुत से बल्ती सैनिक मारे गए। उनका कमान अफसर बजीर गुलाब हुसैन भी वही काम आया।

उसके मरने पर बची हुई बल्ती सेना भाग गई और मैदान जोरावर सिंह के हाथ रहा।

यह मैदान थामूखून ईथंग (मैदान जंग) के नाम से प्रसिद्ध है।

यहां से डोगरा सेना ने आगे बढ़ कर मरोल पर अधिकार कर लिया।

हमजागोंड़ का युद्ध :-

अब बलती सेना आगे आगे और डोगरा सेना उसके पीछे पीछे चली। हमजागोंड़ के स्थान पर बलती सेना ने रुक कर डोगरा सेना को रोकने का प्रयत्न किया मगर हार खाई और भाग गई।

अब असकरदू तक रास्ता में किसी स्थान पर भी कोई रुकावट न पड़ी।

असकरदू की विजय :-

हमजागोंड़ से बढ़ कर जोरावर सिंह की सेना असकरदू में प्रविष्ट हो गई। रास्ता में कोई रुकावट न हुई।

राजा अहमद शाह किले में प्रविष्ट हो गया। किला अभेद्य माना जाता था। यह पहाड़ी पर बना था। इस पर जाने के केवल दो रास्ते थे। एक किले के अन्दर से और एक पहाड़ी के पश्चिम से। बाहिर के रास्ता पर मार करने के लिए किला में एक बुरज था, जहां से इस रास्ता पर गोलाबारी करके रोका जा सकता था।

जोरावर सिंह की सेना ने किला का घेरा डाल दिया। दस दिन तक घेरा रहा मगर कुछ फल न हुआ। कोई रास्ता न देख राजा शेर अली द्वारा अहमद शाह पर प्रभाव डाला गया। उसने समझाया कि जोरावर सिंह से युद्ध करके अपना ही नुकसान है। कब तक किला में रक्षा होगी। अतः मिल कर फैसला करना ही अधिक श्रेयस्कर होगा।

राजा अहमद शाह को भी बात पसन्द आई। वह जोरावर सिंह के पास उपस्थित हुआ। उसे नजरबन्द करके जोरावर सिंह ने किला पर अधिकार कर लिया।

इस प्रकार यह अभेद्य गढ़ भी बिना रक्तपात के हस्तगत हो गया।

अस्तूर पर आक्रमण :-

जोरावर सिंह ने खंडा पर अधिकार करके, अस्तूर को विजय करने के लिए मदीन शाह के अधीन ५०० डोगरा सिपाहियों का एक दस्ता भेजा। राजा जबार खान यह सूचना पा कर किला में प्रविष्ट हो गया। मदीन शाह की सेना ने किला पर घेरा डाल कर पानी बन्द कर दिया। इस पर बाध्य होकर २० दिन बाद जबार खान किला से बाहिर निकला। मदीन शाह ने उसे बन्दी बना कर किला पर अधिकार कर लिया। जबार खान को जोरावर सिंह के सामने उपस्थित किया गया।

अस्तूर की फतह का हाल सुन कर कश्मीर के गवर्नर ने उज्जर किया। कि यह इलाका सिख राज्य में है। इस पर जोरावर सिंह ने जबार खात को आजाद कर, अपनी सेना अस्तूर से वापिस बुला ली।

गयालपो टंडरोफ नगमेल की मृत्यु और उत्तर अधिकारी की नियुक्ति :-

इन्हीं दिनों लद्दाख के राजा (गयालमो) टंडरोफनग मेल की मृत्यु हो गई।

जोरावर सिंह, अपने बन्दी अहमद शाह को साथ लेकर, अन्य वज्जीरों अमीरों के साथ लेह आ गया।

सर्व प्रथम टंडरोफ नगमेल के उत्तर अधिकारी की स्थापना का प्रश्न था। उसका लड़का (युवराज) पहले ही सपिती की ओर भाग गया था और वहां ही उसकी मृत्यु हो गई थी।

उसकी तीन रानियां थी। सबसे बड़ी राणी शै ग्राम में रहती थी। उसके हां पति चले जाने के पश्चात बालक जन्मा था, जो अभी दूध पीता बच्चा था। जोरावर सिंह ने इसी बच्चे को राजगद्दी पर

बिठाने का निश्चय किया ।

तदनुसार रानी को लेह में महल में लाया गया । विधि विधान अनुसार उसके लड़के को राजगद्दी पर बिठाया गया । जोरावर सिंह के अपने हाथ से उसके सिर पर पगड़ी बान्धी । ढाल तलवार से उसे सुसज्जित किया और लहाख का राजा होने की घोषणा की ।

राजा दौलत खान तथा अन्य राजाओं और अमीरों वज्जीरों ने नजराने भेंट किए, बालक (जिसका नाम जगमत नगमेल था) को अपना राजा स्वीकार किया अपनी राज-भक्ति के चिन्ह स्वरूप दरबारी रीति रिवाज का पालना किया ।

वज्जीर जोरावर सिंह :-

बलस्थान की विजय के हालात एक सज्जन गंगाराम नकाशी ने आंखों देखे लिखे ।

महता बस्ती राम और उसके साथियों ने किस तरह पुल बना कर दरिया पार किया, टटड़ी की लड़ाई, हमजा गोंड खरमंग और मायूरदो के किस तरह डोगरा सेना असकरदू पहुँची, कैसे राजा अहमद शाह से किला लिया गया और उसे कैद करके उसके लड़के मुहमद शाह को राज देकर बोनोको को उसका वज्जीर बनाया गया और फिर किस तरह पुशाक के रहीम खान को बगावत का दंड दिया गया—यह सब हालात गंगाराम ने विस्तार से अपनी डायरी में लिखे हैं ।

इस डायरी के अनुसार गोहत्या का दंड मृत्यु घोषित कर सारी जनता को सुरक्षा और निष्पक्ष न्याय का विश्वास दिलाया गया और प्रति घर मालया नियत करके और उसके वसूल करने का प्रबन्ध करके सारे इलाके में शान्ति स्थापन की गई । लड़ाई के पश्चात प्रत्येक

आदमी को क्षमा प्रधान कर हर एक की रक्षा की उचित घोषणाएँ की गई ।

अहमद शाह पर दस हजार का तावान डाला गया और उसे आज्ञा दी गई कि एक मास के अन्दर २ पट राशि अदा कर दे ।

इस कार्य कस्ता के पश्चात जोरावर सिंह शगर चला गया जहाँ ४/५ सह सैनिकों के साथ कुछ दिन आराम किया ।

तिब्बत पर चढ़ाई :-

लहाख बलस्थान और पोरंग को जम्मू राज्य में मिला कर तथा इनका उचित प्रबन्ध करके, जोरावर सिंह ने आगे बढ़ने की योजना बनाई ।

पोरंग, बलस्थान और लहाखी सेनाओं को डोगरा अफसरों के अधीन करके उन्हें प्रशिक्षण दिया गया सभी अफसरों और इलाका के जानकार अमीरों वज्जोरों से परामर्श किया गया । इधर महाराज गुलाब सिंह की आज्ञा मिली कि मान सरोवर और कैलाश पर्वत के प्रसिद्ध और परम पुनीत भारतीय तीर्थ स्थानों को भारत की सीमा के अन्दर ले लिया जाय । और भारत की असली सीमा—जो हिमालय पार है—को प्राप्त कर लिया जाय ।

गुलाब सिंह की अपनी राजनीति थी । वह आस-पास की परिस्थितियों को देख कर, उनकी जांच पड़ताल कर अपनी निति निर्धारित करता था । इस बार भी उसने यही किया ।

तिब्बत इस समय चीन के अधीन था । लामो गुरु की यह रियासत थी लामो सारे बौद्ध जगत में बड़ी ऊँची धार्मिक पदवी पर स्थित था । उधर अंग्रेजी राज्य भी आगे बढ़ता आ रहा था । और तिब्बत पर आक्रमण से वह भी लुब्ध हो सकते थे । पंजाब में सिख

राज्य भी गुलाब सिंह को बढ़ती शक्ति को अच्छी नज़र से न देख सकता था ।

अतः गुलाब सिंह ने समुचित समय की प्रतिज्ञा की और ठीक उस समय आगे बढ़ने की आज्ञा जोरावर सिंह को दी जब इन सभी बातों का समाधान हो गया ।

महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु १८३६ में हुई । एक वर्ष तक ही खड़ग सिंह और कंवर नौनिहाल सिंह भी कत्ल कर दिये गये । सिखों में परस्पर के द्वेष ने देश में इस प्रकार की अराजकता फैला दी कि सिख राज्य और किसी ओर ध्यान देने में असमर्थ हो गया ।

चीन और अंग्रेजी कम्पनी का राज्य भी अफीम के भूगड़े को ले कर आपस में युद्ध प्रस्त हो रहे थे, अतः इस तरफ से भी कोई डर की बात न थी । तिब्बत को हस्तगत करने और भारत की सीमा को हिमालय पार ले जाने का यही समय अत्यंत उपयुक्त था ।

आक्रमण का प्रत्यक्ष कारण:-

किसी भी ऐसे काम को करने के लिए प्रथम यह देखना होता है कि उस के लिए उचित राजनैतिक कारण हो । इस कार्य में भी जोरावर सिंह ने इस औचित्य को अपनाया ।

तिब्बतमें सम्मिलित रोरोक का ज़िला दर असल पोरेग का भाग था । जब पोरेग डोगरा राज्य में चला गया तो जोरावर सिंह ने इस ज़िला पर भी अपना अधिकार समझा और गारू के चीनी गवर्नर को लिखा कि रोरोक का ज़िला वापस पोरेग सरकार के हवाला किया जाय ।

चीनी अधिकारी ने इस मांग को टालने का प्रयत्न किया और ५ घोड़े और ५ खचरों की एक भेंट जोरावर सिंह को भेजी । डोगरा

जरतैल इस प्रकार अपने अधिकार को छोड़ने वाला न था। उस ने आक्रमण की तैयारी कर, आगे बढ़ने की आज्ञा दे दी।

लहाख के किला की खिड़की :-

अपने निश्चय को पक्का घोषित करने के लिए और सेनाओं तथा अन्य लोगों पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालने के लिए जोरावर सिंह ने लहाख के किला की एक खिड़की को बन्द कर, पत्तियां लगा कर ताला लगा दिया और प्रण किया लहासा (तिब्बत की राजधानी) का विजेता ही इसे खोलेंगा। आज भी यह खिड़की उसी प्रकार बन्द पड़ी है।

रोरोक पर अधिकार :-

जोरावर सिंह ने पोरेग, लहाख और बाल्ती सेनाओं की टुकड़ियों को डोगरा अफसरों के अधीन रख कर प्रशिक्षण दिया था। इन सब को इस सेना में ले लिया गया। और रायसिंह के अधीन यह सेना रपशूदानले के रास्ता रोरोक की ओर बढ़ी।

जोरावर सिंह स्वयं अपनी डोगरा सेना को ले कर टांची के रास्ता रोरोक की जानबूझ चला, दोनों सेनाएं रोरोक में जा कर मिल गईं। चीनी सेना ने किला का आश्रय लिया। महता बसती राम ने किला पर आक्रमण कर के आसानी से इस पर अधिकार कर लिया चीनी कमान अफसर युद्ध में मारा गया।

जोरावर सिंह ने इस जिला का प्रबन्धक नियत किया, रक्षा की व्यवस्था की और आगे गर की ओर बढ़ा।

गर पर अधिकार :-

रोरोक से गर को भी दो रास्ते जाते हैं। सेना भी दोनों रास्तों पर बढ़ी। महता बसती राम टशीगांग के रास्ता दरिया सिन्ध के

साथ साथ बढ़ा और वजीर जोरावर सिंह स्वयं लुबरा के रास्ते चला। दोनों सेनाएं गर पर मिल गईं।

इस इलाका में सर्दी के कारण कोई सब्जी या बनस्पति उत्पन्न नहीं होती। मकान न बना कर लोग याक की ऊत से बने खौसां में रहते हैं। इस पर अधिकार करने में कोई कठिनाई न हुई।

यहां एक मामूली मकान की मरम्मत कर, इसे रसद का गुदाम बनाया गया। कुछ सैनिक इस इलाका की सुरक्षा के लिए नियत कर दिए गए।

मनसर में स्वागत :-

मनसर की जनता ने जोरावर सिंह के आने की सूचना पा कर उस का स्वागत किया, जम्मू राज्य की अधीनता स्वीकार की और आगे बढ़ने में सहायता का वचन दिया।

मानसरोवर और कैलाश :-

मनसर से आगे बढ़ कर सेना का कैम्प टोकपोरल पर लगा। यहां से मानसरोवर एक दो दिन का रास्ता है।

मानसरोवर और कैलाश की पवित्रता का ध्यान रख कर और भारतीय परम्परा की रक्षा हित जोरावर सिंह ने अपने अफसरों के साथ परामर्श किया और कहा कि इन तीर्थों की पवित्रता पूर्ण रूप से सुरक्षित रखने के लिए इन पर अधिकार करने में रक्त का एक बिन्दु भी न गिरना चाहिए।

तिब्बती सेना का छापा :-

डोगरा जरनैल और अफसर इस पवित्र इरादा से आगे बढ़े। पोरंग तक शान्ति पूर्ण चले। किसी प्रकार के युद्ध की सम्भावना न देख कर, डोगरा सेना निश्चिन्त थी। रात को शान्ति से सब लोग

सो रहे थे जब पौरांग स्थित तिब्बती सेना ने चुपचाप छापा मारा। रात के अन्धेरे में अपना पराया पहचानना कठिन हो गया।

जोरावर सिंह ने अवस्था की भयानकता को भट समझ लिया। उलझन को सुलझाने के लिए कवच पहन कर बाहिर आ गया। ऊंची आवाज में अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि 'जम्मू राज्य की जय' और 'माता सीतला की जय' के घोष करते चलो, ताकि अपने साथियों का ज्ञान रहे।

अन्धेरे में युद्ध चलता रहा। यहां दोनों ओर काफी हानि हुई। मगर दिन का प्रकाश होते ही तिब्बती सेना भाग खड़ी हुई। उन का चीते वाला झण्डा अब तक यादगार के रूप में डोगरा सेना के पास है।

पोरेग पर अधिकार कर लिया गया। अब रास्ता साफ था। मानसरोवर और कैलाश तक सेनाएं शान्ति से चली गईं। इन तीर्थों पर जाने या इन पर अधिकार करने में रक्तपात न करना पड़ा।

मान तलाई :—

मानसरोवर का स्थानक नाम सोमोमाफम है। जब प्राचीनकाल में महाराजा मानधाता ने इस पर अधिकार किया और इसे भारत सोमा का चिन्ह नियत किया तो उसी के नाम पर इसका नाम मानसरोवर रखा गया।

जोगावर सिंह के समय से इस का डोगरी नाम करण "मान तलाई" हुआ।

उत्सव :-

मानसरोवर और कैलाश की यह यात्रा धार्मिक रूप लिए थी। यहां सेनाएं कुछ दिन रहीं। भारतीय झण्डा लहराया गया। उत्सव

प्रभाया गया। दान पुण्य किया गया सब ने पुण्य स्नान किया। प्रभु का धन्यवाद किया कि भारत के पवित्र तीर्थ स्थान पुनः भारत के वीरपुत्रों के अधिकार में आ गए हैं और भारत की सीमा अपने असली स्थान पर पहुँच गई है।

अन्तराज्य सीमाएं :—

जम्मू राज्य की सीमा एक ओर नेपाल राज्य से, और दूसरी ओर जिला कमाऊ में अंग्रेजी राज्य से जा मिलती। नेपाल के राजा के सुसंदेश वाहक जोरावर सिंह से आ कर मिले। उन का समुचित आदर कर उन्हें वापस भेजा गया। दोनों राज्यों के सम्बन्धों में कटुता नहीं आई।

अंग्रेज न चाहते थे कि जोरावर आगे बढ़े। चुनांचि उनके कहने पर महाराजा शेरसिंह की ओर से भी यह इशारा मिला कि आगे न बढ़ा जाय।

इधर अंग्रेजी प्रतिनिधि श्री कनिंघम ने भी बसती राम और कालूराम ने डोगरा अफसरों द्वारा जोरावरसिंह को संदेश भेजा कि सर्दी बढ़ रही है, लड़ाख बहुत पीछे रह गया है, सर्दियों में पीछे के साथ सम्बन्ध रखना कठिन हो जायगा। अतः वापस जाना ही श्रेयस्कर होगा।

इन परिस्थितियों में जोरावर सिंह ने आगे लहासा पर बढ़ने का विचार छोड़ दिया।

दरिया घागरा पर स्थित गुम्पा शोशक तीर्थ की यात्रा कर, वापसी की आज्ञा दी।

इस प्रकार जोरावर सिंह ने जम्मू राज्य की सीमा नेपाल के साथ मिला दी। और सेनाएं वापस मुड़ी। इस पुरानी सीमा पर एक पत्थर पर दोनों ओर का नाम लिखा था।

अब कैलाश, मानसरोवर तथा ब्रह्मपुत्र, सतलुज, घागरा, सिन्ध के स्रोत स्थानों पर जम्मू राज्य का झंडा फुला दिया गया था।
अन्त :-

सर्दी बढ़ गई। रसद समाप्त होने लगी। लद्दाख काफी दूर था। रास्ता भयानक था। जब जोरावर सिंह मानसरोवर के रास्ता वापिस चला।

तिब्बत के लामा राजा ने यह समय उपयुक्त समझा और एक बड़ी सेना जोरावर सिंह के साथ लड़ाई के लिए भेज दी।

अभी जोरावर सिंह दो पड़ाव ही वापस चला था कि सात नवम्बर १८४१ को उसे प्रथम सूचना मिली कि तिब्बती सेना निकट आ गई है।

किला करतोंग :—

किला करतोंग की रक्षा के लिए तथा वहां अवतारा थानेदार की सहायता के लिए उस ने नोनोज़म की कमान में १०० सैनिक रवाना किए और अपनी पत्नि को लद्दाख भेज स्वयं अपनी सेना को रोक युद्ध की तैयारी में लग गया।

करतोंग पर तिब्बती सेना ने अधिकार कर लिया, अवतारा तथा डोगरा सैनिक मारे गए।

उस ने नोनोज़म, गुलामखान, मियां सिंघ, मियां सिंगारा और भूपा कोत्वाल को ६०० सिपाहियों के साथ तिब्बती सेना को रोकने के लिए भेजा, मगर इस सेना का भी वही हाल हुआ जो पहली का हुआ था।

तोयो का युद्ध और मृत्यु :-

इन परिस्थितियों में उस ने तलका कोट और करदाम कोट की

रक्षा के लिए कुछ आदमी भेज कर शेष लगभग २००० सैनिकों के साथ लहासा की सेना से दो दो हाथ करने के लिए तैयारी की और करतोंग और तफलाखर के मध्य तोपों के स्थान पर मोर्चा जमाया।

लहासा की सेना दस हजार थी। यारकंद से २००० सैनिक और आने वाले थे। उन्हें सर्दी का अभ्यास था। डोगरों के लिए यह समय बड़ा संकट का था। बड़ी सेना से मुकाबला की उन को चिन्ता नहीं, मगर सर्दी और बर्फबारी का सामना करना उन के लिए कठिन था।

१० दिसम्बर १६४१ भर सर्दी में जोरावर सिंह ने आगे बढ़ कर लहासा की सेना पर आक्रमण कर दिया। तीन दिन युद्ध जारी रहा। कठिनतम हालात में भी डोगरा सेना ने वीरता से तिब्बती सेना का मुख मोड़ दिया। मगर अचानक एक घटना ने पासा पलट दिया।

जोरावर सिंह घोड़े पर स्वार था कि उस की दाहिनी रान पर गोली लगी और वह घोड़े से गिर पड़ा। उसे शत्रु ने चारों ओर से घेर लिया। हाथ में तलवार ले कर वह अपना बचाव करता रहा। इसी समय एक तिब्बती सैनिक ने पीठ की तरफ से एक बरछी (दोंग) का वार दूर से किया। यह बरछी उस की पीठ में लगी और सीना से पार हो गई। दोंग के दोनों ओर फाले होते हैं, और बीच में रस्सी से पकड़ कर घुमा कर मारा जाता है। यह तिब्बतियों का एक विशेष हथियार है।

जरनैल जोरावर सिंह की मृत्यु (१२-१२-१६४१) के साथ डोगरा सेना का धैर्य टूट गया और वह भाग निकली। करीब एक हजार आदमी कैदी बना लिए गए। महता बसती राम तफलाखर के

किला से चंगला आछेला के रास्ता अलमोड़ा की तरफ चला गया। करीब एक सौ डोगरा सिपाही और १५०० लहाखी वापस लहाख पहुँच गये।

इन की अवस्था बहुत खराब थी। सर्दी से हाथों की उँगलियाँ उड़ गई थीं, खाने का सामान न था। रास्ते में लकड़ी के न मिल सकने से आग तापने का भी प्रबन्ध न हो सका था।

इस प्रकार प्रायः सारी सेना और जरनैल जोरावर सिंह यहाँ काम आए।

जोरावर सिंह का शव :-

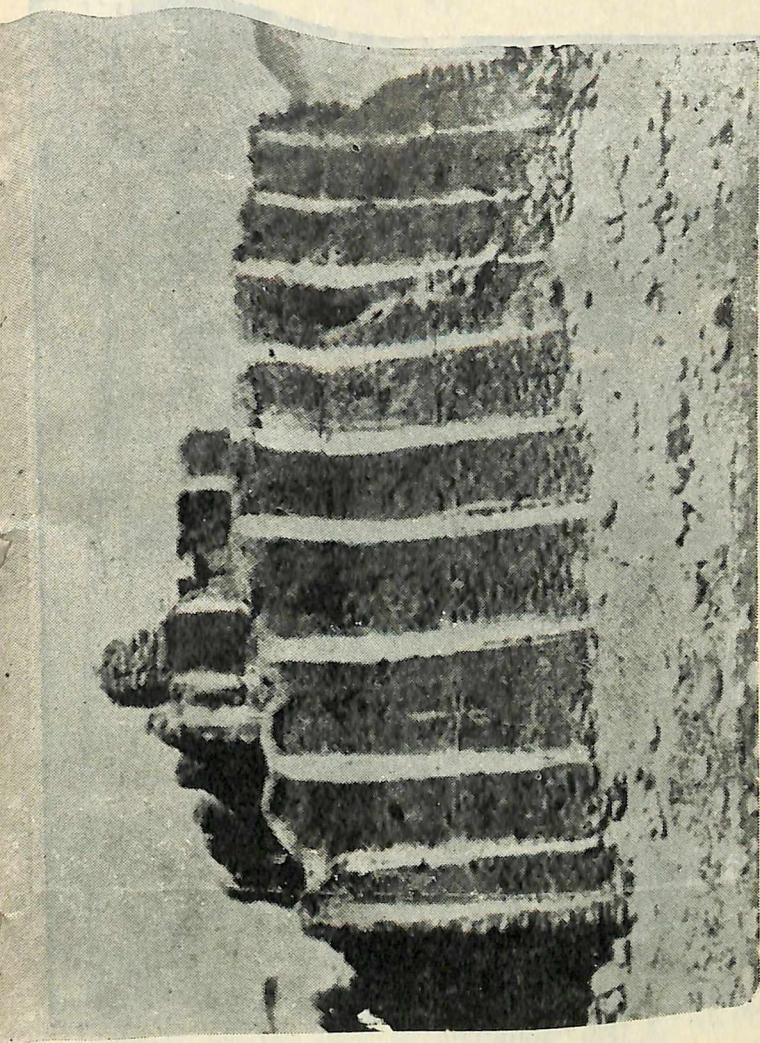
जोरावरसिंह का सिर काट लिया गया। और छोरतन (समाधि) में रखा गया। इसी प्रकार इस के शव के टुकड़े कर तिब्बती सेना के नायक अपने धरों को ले गए।

छोरतन में सिर की समाधि की अब तक पूजा की जाती है। उन का विश्वास है कि शव के टुकड़े पवित्र हैं और इन की पूजा अर्चना से जोरावर सिंह दूसरा जन्म ले कर वापस न आ सकेगा।

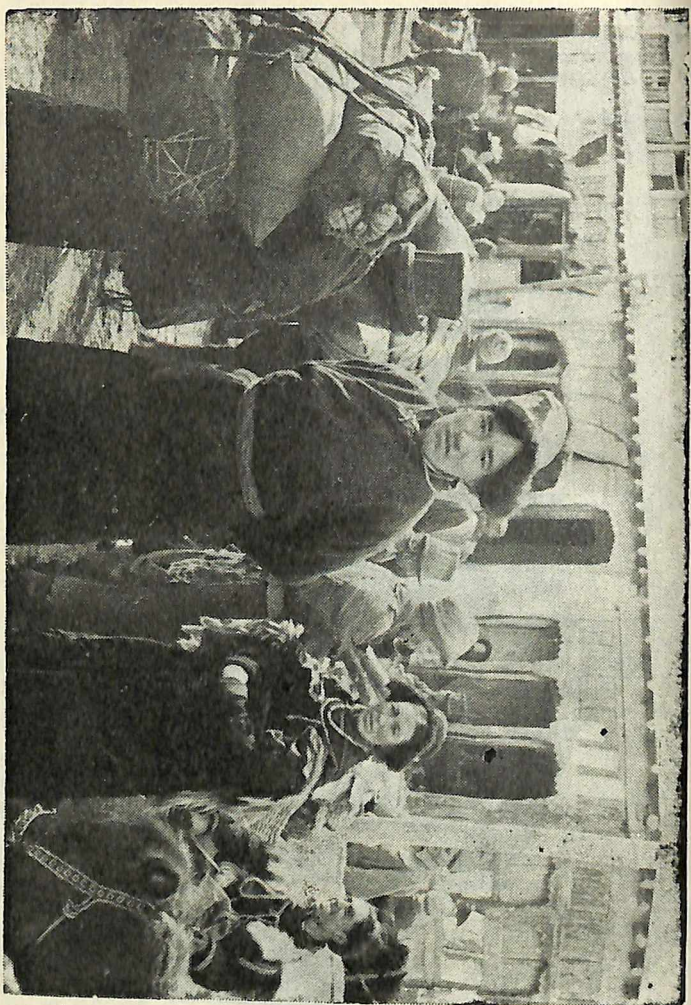
मियां रायसिंह सहायक सेनापति तथा लहाखी और बलती अफसरों में से सेवांग सतवान, कालवन बजगो, उस का भाई मोनोजम, मौरूप सतनजन, अजोगनयो और राजा अहमदशा, गुलाम खान आदि कैद कर के लहासा भेज दिए गए।

लहाख और बलत्स्थान में विद्रोह :-

इन परिस्थितियों में विजित प्रदेशों का विद्रोह निश्चित सी बात थी। लहासा के सेनापति पोशीशाटा ने लेह पहुँच कर राजा जगमत नमगेल के स्वतन्त्र होने और जम्मू राज्य के अधिकार के अन्त की घोषणा की।



मध्य तिब्बत के स्थान तकला कौट में नरनैल जोरावर सिंह की समाधि



लद्दाख के केन्द्रीय इलाका लेह के बाजार का दृश्य

मगना थानेदार के अधीन कुछ सेना किले में थी। और कुछ सेना कमेदान पहलवान सिंह के अधीन करोज़ बाग में स्थित थी।

इन सेनाओं को घेर लिया गया। डोगरों ने बाहिर निकल कर आक्रमण कर, लदाखी सेना को मार भगाया। यह युद्ध जारी था कि मलका में स्थित डोगरा सेना को वहां के कालवन ने मौत के घाट उतार दिया।

राजा सोत ने पसरीखर की सेना का यही हाल किया।

सोरो करतसे में भी विद्रोह हो गया और डोगरा सैनिक मार दिए गए।

राजा पुशकम ने भी वहां स्थित डोगरों को कैद कर लिया।

असकरदू में थानेदार भगवान सिंह के अधीन डोगरा सेना कैदी बना लिए गए। और खंद के राजा अलीखान, खपलू के राजा दौलत खान, करस के राजा नूरमखान ने विद्रोह कर दिया।

राजा अहमदशाह की ओर से हैदरखान ने असकरदू की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।

इस प्रकार लदाख और बलत्स्थान जम्मू राज्य के अधिकार से निकल गए।

लदाख पर दूसरा आक्रमण :-

जोरावर सिंह की वीरगति और डोगरा सेना की तबाही तथा विजित प्रदेशों के सफल विद्रोह की सूचना गुलाब सिंह को उस समय मिली, जब वह पंजाब हकूमत की ओर से अंग्रेजों की उस सेना को सहायता देने के कार्य में लगा था, जो दर्रा खैबर से काबल को मार्च कर रही थी और अपनी पहली पराजय तथा विनाश का बदला लेने के लिए आगे बढ़ रही थी।

अंग्रेजों की इस समय की परिस्थितियां वैसी ही थीं, जैसी

गुलाब सिंह की। उस ने सूचना मिलते ही मेजर लारेंस को कहा कि यह खबर प्रगट न की जाए। ऐसा न हो कि डोगरा सेना बेदिल हो जाए।

उधर उसने अपने दीवान जवाला सहाय को आज्ञा दी कि लहाख को हस्तगत करने और शत्रु तथा विद्रोहियों को उन की करनी का फल देने के लिए प्रबन्ध किया जाए।

उस की आज्ञानुसार दीवान हरिचन्द के सेनापतित्व में छः हजार डोगरा वीरों की एक शक्ति सम्पन्न सेना तैयार कर के लहाख रवाना की गई। दीवान रतनू को सेनापति हरिचन्द का सहायक सेनापति नियुक्त किया गया।

फरवरी १९४२ था। अभी मर्दी ज़ोरों पर थी। यह सेना उड़ी के रास्ता कश्मीर पहुंची। कश्मीर के गवर्नर शेख गुलाम मुह्युद्दीन ने बार बरदारी के प्रबन्ध में सहायता दी और ५०० जवान प्रतिदिन लहाख की ओर भेजे जाने लगे।

इस तरह पन्द्रह दिन में तमाम सेना कश्मीर से कूच कर गई। अन्तिम दिन वज्जीर रतनू और उस के दूसरे दिन सेनापति दीवान हरिचन्द ने कश्मीर से लहाख की ओर मार्च कर दिया।

श्रीनगर से लैह तक :-

रास्ता अभी बर्फ से अटा पड़ा था। तो भी दीवान हरिचन्द पड़ाव पर पड़ाव मारता शीघ्र ही दरास पहुंच गया और दरास से करगल जाते हुए रास्ता के सभी किलों पर अधिकार कर उनपर अपनी सरकार के झण्डे गाड़ दिये। आस पास के लोग आ आकर अधीनता स्वीकार करते, भेंट देते और राज्य भक्ति का विश्वास दिलाते। प्रत्येक को आश्वासन देते हुए और रक्षा तथा राज्य प्रबन्ध करते हुए सेना-

पति लेह की ओर बढ़ता चला गया ।

करगल का मोर्चा :-

बर्फ, सर्दी और पहाड़ी रास्ता की कठिनाई से लाभ उठा कर लहाख और करगल की सेना ने करगल के करीब मोर्चा स्थापित कर रखा था । और डोगरा सेना से दो दो हाथ करने को तैयार बैठी थीं ।

दीवान हरिचन्द ने हालात देख कर यहां पड़ाव डाल कर एक मास प्रतीक्षा की कि कुछ बर्फ पिघल जाए और रास्ता मिल जाए ।

इस के पश्चात जमादार रामसिंह के अधीन तीन हजार जवान छानगंड पहाड़ की चोटी पर भेज दिए गए ।

सेना का दूसरा भाग वजीर रत्न और सेनापति की कमान में सीधे रास्ते से खरल पहुँच गई ।

दोनों तरफ से घिर कर शत्रु सेना मुकाबला न कर सकी और मोर्चे छोड़ कर भाग गई । करगल पर अधिकार कर लिया गया ।

करगल से लेह तक मारच :-

करगल का मोर्चा विजय कर दीवान हरिचन्द आगे बढ़ा । रास्ते में पसरी खर, पुशकम, मलवा, मलाचक खर, किलों पर अधिकार कर, उन्हें जला दिया गया । और विद्रोहियों को उचित दण्ड दे कर जम्मू राज्य का अधिकार स्थापित किया गया ।

पुशकम के राजा मुहमद अली खान ने मुकाबला का प्रयत्न किया । उस की सारी सेना लड़ाई में मारी गई । केवल एक आदमी जान बचा कर भाग सका ।

खलसी के स्थान पर दरिया पर का पुल टूटा पड़ा था । इस की मरम्मत करने में कुछ दिन लगे । यहां दरिया पार कर, आगे लेह जाने के लिए बज्रगो तक दो रास्ते हैं ।

वजीर रत्नू दरिया के साथ साथ नबाला और सपूल के रास्ते बजगो पहुंचा और सेनापति किला तंगमोगंग के रास्ता से गया। यह किला लड़ाख भर में बहुत दृढ़ माना जाता है। इस के पास से रास्ता तंग है, पहाड़ी है। एक नाला पार करना होता है। यहां शत्रु ने मोर्चा बना कर रास्ता रोकने की चेष्टा की। मगर दीवान हरिचन्द का सामना करना आसान न था। उस के आने पर शत्रु सेना भाग गई।

किला तंगमोगंग नष्ट कर के दीवान हरिचन्द आगे बढ़ा। बजगा के स्थान पर वजीर रत्नू से जा मिला।

लेह पर अधिकार :-

लेह में कमेदान पहलवान सिंह और मगना थानेदार, लड़ाखी और तिब्बती सेना से मुकाबला में अभी तक डटे हुए थे। कभी कभी हवेली से निकल कर शत्रु सेना पर आक्रमण भी कर देते थे।

जब दीवान हरिचन्द और डोगरा सेना के आने तथा रास्ते में सभी किलों के सर हो जाने की सूचना लेह पहुँची तो लहासा की सेना का धैर्य टूट गया। वह लेह छोड़ तिब्बत की तरफ चल दी।

जगमत नमगेल, जिस ने डेढ़ मास पहले स्वतन्त्र होने की घोषणा की थी, अपनी माता को साथ ले कर लासा भाग गया। लेह पर दीवान हरिचन्द ने पुनः अधिकार कर लिया।

सर्वप्रथम जम्मू राज्य का झण्डा गाड़ कर उसे बाकायदा सलामी दी गई। कमेदान पहलवान सिंह और थानेदार मगना की वीरता और दृढ़ता तथा राजभक्ति की सराहना की गई।

विद्रोहियों को उचित दण्ड दिया गया। राज महल का सामान छावनी में पहुंचा दिया गया और आस पास के प्रदेशों में अधिकार स्थापित करने की चेष्टा की।

मियां जवाहर सिंह को कुछ सेना दे कर जन्सकार भेजा गया। उस ने वहां के विद्रोह का दमन कर किला पर अधिकार कर लिया।

कश्मीर से जो मजदूर आदि बार बरदारी के काम के लिए आए थे। उन को मजदूरी तथा इनाम दे कर वापस भेजा गया। लहाख के सरकरदा सरदारों को उचित सम्मान दे कर तथा स्थान स्थान पर अपने विश्वस्त पदाधिकारी नियत कर सब सुप्रबन्ध किया गया।

डरेंगसी का युद्ध :-

पहले बताया जा चुका है कि दीवान हरिचन्द और डोगरा सेना की सूचना पा कर तिब्बती सेना लेह छोड़ कर शायोक की तरफ भाग गई थी। जब लासा में यह सूचना मिली तो वहां से तीन हजार सेना तैयार कर के लहाख सेना की सहायता के लिए भेजी गई। इन सेनाओं ने डरेंगसी के पास एक ऊंचे स्थान पर, दरिया के पास मोर्चे बना लिए।

दीवान हरिचन्द ने स्थान की परिस्थिति देखी तो जान गया कि तिब्बती सेना को अपने मोर्चे में हराना एक समस्या है। वहां पहुंचना तक आसान न था।

सोच विचार कर सेनापति की आज्ञानुसार सेना ने दरिया में बन्द बांध कर पानी रोक दिया। परिणाम स्वरूप पानी का तल ऊपर उठ कर तिब्बती सेना की खायाँ (मोर्चों) में घुस गया और वह मोर्चा छोड़ बाहिर आने को बाध्य हो गई।

बन्दूकें छोड़, सैनिकों ने भाले, बरछियाँ, तलवारें निकाल लीं, दस्तबदस्ता युद्ध आरम्भ हो गया। इस में तिब्बती सेना, डोगरों का सामना करने में असमर्थ थी। अतः बहुत से सैनिक मारे गए। बाकी भाग गए। सेनापति भी मारा गया।

इस युद्ध से तिब्बती हकूमत का जोश ठण्डा पड़ गया। और वह सन्धि की चर्चा करने लगी।

सन्धि :-

दोनों तरफ के अधिकारी आपस में मिले, और २ असूज सम्बत १८६६ तदानुसार १५ अगस्त सन् १८४२ को सन्धि की शर्तें निश्चित हो कर हस्ताक्षर हो गए।

सन्धि में भाग लेने वाले अपनी अपनी सरकार से नियुक्त किए मुख्य २ व्यक्ति निम्नलिखित थे।

१. तिब्बत के लामा गुरु की ओर से—

कालवन सोफनवाला

२. चीन की ओर से—

बक्षी सायचो—चीनी सेनापति।

३. महाराजा गुलाब सिंह की ओर से -

(क) दीवान हरिचन्द

(ख) वज्जीर रत्नू

बाद में इस सन्धि की स्वीकृति लाहौर दरबार और चीन सरकार से ली गई और दोनों सरकारों के प्रतिनिधियों ने भी हस्ताक्षर किए।

लाहौर दरबार की ओर से शेख गुलाम मुहयलद्दीन गवर्नर कश्मीर महाराजा गुलाब सिंह की ओर से दीवान हरिचन्द सेनापति और शहनशाह चीन की ओर से बक्षी सायचो ने हस्ताक्षर किए।

इन सभी सन्धि पत्रों की शर्तें एक जसी ही थीं। उन की प्रधान शर्तें निम्नलिखित थी :-

(१) यह कि सभी सरकारें जम्मू, लाहौर, लासा और चीन—परमात्मा को साक्षी रख कर घोषणा करती हैं कि इन सभी शर्तों का पूर्ण रूप से पालन करेंगी।

- (२) सभी सरकारें परस्पर प्रेम और भाईचारा से रहेंगी। और मित्रता को सदा स्थिर रखेंगी।
- (३) यह कि परस्पर के मित्रता के भावों को हर प्रकार से बढ़ाया जाएगा।
- (४) यह कि लद्दाखी अपना वार्षिक कर लामा गुरु को लासा में देते रहेंगे। यह प्राचीन प्रथा के अनुसार ही चालू रहेगा।
- (५) यह कि महाराजा गुलाब सिंह इस प्राचीन प्रथा में रुकावट नहीं डालेंगे।
- (६) यह कि व्योपारक चीजों का आदान-प्रदान प्राचीन प्रथा के अनुसार ही चलता रहेगा। उस में किसी प्रकार की रुकावट न डाली जायगी।
- (७) तिब्बती व्यापारियों के लिए लद्दाखी सवारी तथा मजदूरों का प्रबन्ध पहली प्रथा के अनुसार करते रहेंगे। और जो लद्दाखी तिब्बत में वार्षिक कर देने जावेंगे। उन के रहन-सहन खान-पान का प्रबन्ध लामा गुरु की ओर से प्रथम प्रथा के अनुसार हो हुआ करेगा।
- (८) यह कि लद्दाख, तिब्बत, चीन की प्राचीन सीमा स्थिर रहेगी। अपने २ प्रदेश से कोई सरकार भी आगे बढ़ने की चेष्टा न करेगी। और अपने अपने इलाका पर ही अधिकार रखेगी।
- (९) यह कि प्राचीन सीमा पर जो दरें हैं, उन में कोई भी पार्टी अनाधिकार चेष्टा नहीं करेगी।
- (१०) यह कि परमात्मा को सन्मुख रखकर सभी पार्टियां एक परिवार की तरह परस्पर भाईचारा से बर्ताव करेंगी और मित्रता के भावों को सदा बढ़ावा देंगी।

इन सन्धियों के अनुसार जो प्रदेश—रोदोक, गर, कोंगो, पोरान्ग

आदि—वज़ीर जोरावर सिंह ने विजय किए थे, पुनः लहासा सरकार के हवाले कर दिए गए।

लहाख के ग्यालपो (राजा) का जो सम्बन्ध तिब्बत सरकार और लामा गुरु से था, वही जारी रहा और सभी सरकारों ने उस को मान्यता दे दी।

लहाख की तिब्बती सीमा वहीं मानी गई जो ग्यालपो टंडरोफ नमगेल के समय में थी। कैदियों का तबादला कर लिया गया।

सन्धियों पर अमल :-

परस्पर मित्रता के भावों की स्थापना के लिए कार्य उसी समय आरम्भ कर दिया गया। लहासा और जम्मू में सन्धियों की स्वीकृति होते ही दीवान हरिचन्द तिब्बती वकीलों, अन्य अफसरों और कैदियों को साथ ले कर वापस जम्मू आया।

महाराजा गुलाब सिंह ने तिब्बती वकीलों और अफसरों का उचित मान किया और उनको खिल्यत दिया और तिब्बती कैदी वापस भेजे गए।

लहाख का प्रबन्ध :-

ग्यालपो जगमस्त नमगेल और उसकी माता तथा उसके साथियों को सरकार तिब्बती ने वापस लहाख भेज दिया।

वज़ीर दीवान हरिचन्द ने उनका स्वागत किया और उसके दादा टंडरोफ की सारी जागीर स्टोक उसको वापस कर दी। उसके सौतेले भाई को भी माठो की आधी जागीर दे दी।

बाद के हालत :-

ग्यालपो जगमस्त नमगेल की मृत्यु हो जाने के बाद उसके पुत्र सनम नमगेल को ग्यालपो की मान्यता दी गई। जागीर के अतिरिक्त

सरकार जम्मू ने कुछ नकद वज्जीफा भी नियत कर दिया।

सनम नमगेल भिलु बन कर गुम्पा में प्रविष्ट हो गया तो उस के बेटे डाडावल को स्टोक की जागीर दी गई। महाराज हरिसिंह ने प्रजा सभा बनाई तो इसे उस का सदस्य मनोनीत किया। स्टोक की जागीर के अतिरिक्त उसे कुछ जागीर नोब्राह में भी प्रदान की गई।

सन १६४७ तक यह जागीर उस के उत्तराधिकारियों के पास रही।

लदाख का राज्य प्रबन्ध :-

वज्जीर हरिचन्द के वापस जम्मू आ जाने पर, लदाख के प्रबन्ध के लिए वज्जीर रतू वहाँ रहा। उस ने सारे प्रदेश में शान्ति स्थापित कर, मियां मगना को लदाख का प्रथम थानेदार नियत कर, सब अधिकार उसे दिए। एक लदाखी अपनोर गजन को उस का सहायक नियत किया गया।

वज्जीर लखपती किशतवाड़िया

और

बलत्स्थान के विद्रोह का दमन

वज्जीर जोरावर सिंह की मृत्यु और डोगरा सेना के विनाश के समाचार से सारे बलत्स्थान में विद्रोह फैल गया। यह विद्रोह पोरंग और जन्सकार में भी फैल गया। इन प्रदेशों में डोगरा राज्य समाप्त हो गया। वहाँ रहने वाले सैनिकों और अफसरों को मार दिया गया या कैद कर लिया गया।

जब वज्जीर हरिचन्द और वज्जीर रतू छः सहस्र सेना ले कर लदाख की ओर बढ़े तो महाराज गुलाब सिंह ने बलत्स्थान आदि

प्रदेशों में विद्रोह का दमन करने के लिए वजीर लखपत किशतवाड़िया को तीन हजार सेना दे कर बलस्थान भेजा ।

लखपत तेज २ कूच करता हुआ माला चेलोग के रास्ता किशतवाड़ से सोरो पर अधिकार कर के करगल पहुँच गया ।

उस समय अस्कदू और शगर पर काचोहैदर खान ने अधिकार कर रखा था । शगर का राजा सुलेमान खान और अस्कदू का राजा मुहमद शाह दोनों उस की कैद में थे । डोगरा अफसरों और सैनिकों को भी उस ने कैद कर लिया हुआ था ।

करतखता के राजा शेर अली खान से परामर्श कर, वजीर लखपत ने करगल से अस्कदू की ओर कूच किया । वह इस वेग से आगे बढ़ा और रास्ता में पड़ने वाले किलों और बुर्जों पर इस प्रकार उसने अधिकार कर लिया कि काचोहैदर खान ने उस से मुकाबला करना अच्छा न समझ अस्कदू के किला खरपोछे में शरण ले ली । लखपत ने कफचून पर अधिकार कर के किला खरपोछे का घेरा डाल लिया । किला काफी दृढ़ था । उसे सर करना आसान काम न था । अतः किला के द्वारपाल अफसर वजीर मुहमद अली से गांठ सांठ की गई । उस ने रात को दरवाजा खुला रखा । नियत समय पर लखपत ने स्वयं सेना ले कर किला पर आक्रमण कर दिया और अन्दर दाखल हो गया । घमसान का युद्ध हुआ । बहुत से बल्ली सिपाही मारे गए । कुछ दरिया में भागते हुए डूब मरे और किला पर अधिकार कर लिया गया ।

काचोहैदर खान जान बचा कर उत्तरी दरवाजा से यारकन्द की ओर भाग गया । मगर राजा दौलत खान के आदमियों ने उसे पकड़ कर वजीर लखपत के पेश कर दिया । उसने इसे और इसके साथियों को कैद कर जम्मू भेज दिया ।

किला खरपोछे उजाड़ दिया गया। और एक नया किला निर्माण किया गया। इस में तीन सौ डोगरा सिपाही और थानादार भगवान सिंह को नियुक्त कर के इस प्रदेश की सुरक्षा का प्रबन्ध कर दिया गया।

असकरदू के असली राजा मुहमद शाह को कैद से निकाल कर पुनः असकरदू का राजा नियत कर दिया। जो डोगरा अफसर और सैनिक काचोहैदर खान की कैद में थे, उनको कैद से निकाल कर, उन का उचित सम्मान किया गया।

खपलू के राजा दौलत खान, कोसल के राजा खुरम खान तखशा के राजा शेर अली खान तोलती के राजा अहमद खान को अपनी जागीरों में बहाल कर दिया गया। उन के अधिकारों की भी पुनः स्थापना की गई।

शगर का राजा सुलेमान खान मर चुका था। अतः उस के पुत्र अमाम कुली खान को शगर का जागीरदार नियुक्त किया गया।

इस प्रकार असकरदू और आस पास के सभी जागीरदार पुनः स्थापित हो गए और सब ने जम्भू की अधीनता स्वीकार कर ली।

रोंदो का विद्रोह शान्त कर वहां राजा अलीखान को जागीरदार बहाल किया।

अस्तूर के राजा जबार खान ने किला बन्द हो कर मुकाबला करने की चेष्टा की, मगर एक ही दिन में हार गया और अधीनता स्वीकार कर ली।

जन्सकार में शान्ति स्थापना :-

असकरदू, अस्तूर आदि का सुप्रबन्ध कर और वहां के विद्रोहियों का दमन कर तथा राजभक्त जागीरदारों की पुनः स्थापना कर वजीर

लखपत वापस जम्मू की ओर लौटा ।

पोरेग, पुश्कम और सूत के जागीरदारों को उचित परामर्श देता हुआ वह जन्सकार पहुँच गया । यहां गयालपो चेमोर ने विद्रोह कर के थानादार रैनु तथा उस के सिपाहियों को मार कर डोगरा राज्य की समाप्ति कर दी थी ।

वज्जीर लखपत का नाम सुनते ही जनता ने आत्म समर्पण कर दिया और जम्मू की अधीनता स्वीकार कर ली । गयालपो चेमोर और उस के विद्रोही साथी कैद कर के जम्मू भेज दिए गए और उन की जागीर व जायद में सरकारी अधिकार में कर ली गई ।

गयालपो का युवराज बलचून भाग कर कश्मीर चला गया । यहां उसे चेचक निकली और मर गया ।

जन्सकार में महता वस्तीराम को थानादार नियुक्त किया गया । उस के पास कुछ सैनिक छोड़ कर, वज्जीर लखपत जम्मू वापस चला आया ।

लद्दाख का राजनैतिक इतिहास :-

बौधकाल :-

लद्दाख के स्वतन्त्रता के समय वहां एक प्रकार का जागीरदाराता प्रबन्ध था । राजा लद्दाख के अधीन स्थान स्थान पर जागीरदार थे ।

यह जागीरदार न ही मालिया देते थे, न ही कोई और कर । मगर आक्रमण के समय अपने खर्च पर प्रति घर एक सैनिक के हिसाब से सैनिक देते थे । इन को लड़ाई का सामान राजा की तरफ से दिया जाता था ।

घरेलू व्यय :-

जागीरदार राजा के घरेलू व्यय के लिए नियत वस्तुएं दिया करते थे । जैसे—अनाज इलाका नोब्राह के २४ ग्रामों से और लामा-

पोखो बजगो और शै के ग्रामों से छः छः मास के लिए दिया जाता था ।

राजा की अपनी जमीन की खेती भी जागीरदार बेगार में करते थे जिम्मादार को यहां से भी अन्न राजा के गुदामों में ही जाता था

जपशोद और टांची के लोग वर्ष भर के लिए गोशत, जन्सकार के ग्राम मक्खन, नाला जात चलंग के लोग लगभग साढ़े तीन हजार मन लकड़ी देने के जिम्मादार थे । टांची के लोग बेगार में पट्टू तैयार कर के देते थे, जिस के लिए उन तीन पाव प्रति घर के हिसाब से सारे लदाख से आती थी । दस भेड़ बकरियों के पीछे एक भेड़ या बकरी राजा को दी जाती थी, जिन्हें सरकारी चरवाहे चारते और पालते थे । इन से राजा के घर में गोशत, मखन, ऊन आदि आती थी । नकदी की आवश्यकता पूरी करने के लिए प्रति घर सवा तीन आना कर वसूल किया जाता था ।

जो लोग हर तीसरे वर्ष लदाख से तिब्बत व्यापार करने या राजा की सेंट ले कर लहासा जाया करते थे, और जिन को बार बरदारी और कुली मजदूर बेगार में मिलते थे, राजा के घर के व्यय के लिए चाय आदि देने के जिम्मादार थे ।

व्यापार :-

तिब्बत के साथ व्यापार सरकारी तौर पर होता था । जो सौदागर यह कार्य करते थे, उन को सरकार तीन हजार रुपया देकर वापसी पर छः हजार वसूल करती थी । इसी प्रकार यारकन्दी सौदागर बारह हजार से तीस हजार रुपया वार्षिक तक राजा को अदा करते थे ।

बौद्ध मंदिरों का प्रबंध :-

ग्राम २ में बौद्ध मन्दिर (छोरतन) हैं । इन का निर्माण और

मुस्मत भी जागीरदारों व जमींदारों का कर्तव्य था। गुम्पा (बड़े बौद्ध मन्दिर) में पूजा तथा अन्य काम के लिए सरकार की ओर से लगान विहीन जमीन या नकद मुआफी नियत थी। गोम्पो के प्रबन्धक यह सब आय इकत्रित कर के काम करते थे।

प्रबन्धक अफसर :-

राज्य का कार्य भार प्रधान मन्त्री (कालवन) चलाता था। उस के अधीन प्रत्येक जागीर और इलाका में छोटे कालवन नियत थे। जिन के अधीन ग्रामों में "मुकदम" थे।

इस काम के लिए सरकारी खजाना से किसी को वेतन न मिलता था। ऐसी प्रथाएं प्रचलित थीं, जिन के द्वारा प्रत्येक कालवन और मुकदम अपना भाग अपने इलाका से ही प्राप्त करता था। इस का अन्तिम बोझ भी जमींदारों पर ही था।

जोरावर सिंह का प्रबन्ध :-

जब जोरावर सिंह ने लद्दाख जीत कर जम्मू राज्य में मिलाया तो पुराने प्रबन्ध को उसी प्रकार रहने दिया। टंडरोफ नमगेल को गयालपो मान कर उस के भीतरी प्रबन्ध में हस्तक्षेप न किया गया।

केवल नौ हजार रुपया वार्षिक कर लगा दिया गया। जब गयालपो ने विद्रोह किया और दूसरी बार लद्दाख पर अधिकार करने की आवश्यकता हुई तो टंडरोफ नमगेल के स्थान पर उस के कालवन मौरुप सटनजन को राजा नियुक्त करके कर की राशि अठारह हजार रुपया वार्षिक कर दी गई।

जब सटनजन भी अपने कर्तव्य के पालन करने में असफल रहा तो वजीर जोरावर सिंह ने सारा प्रबन्ध सीधा जम्मू से ही करने के लिए लद्दाख के लिए मगना धानादार (प्रबन्धक) नियुक्त कर



महता बस्ती राम लफटीडेंट जरनैल जोरावर सिंह



लेह स्कूल की कक्षा में लहाखी छात्र व छात्रायें

दिया। इस प्रकार जम्मू से नियुक्त अधिकारियों में मगना थानादार प्रथम था।

दूसरे विद्रोह के पश्चात् जब वजीर हरिचन्द ने लहाख और वजीर लखपत ने बलत्स्थान आदि का सम्बन्ध पुनः जम्मू राज्य से किया तो जोरावर का जारी किया हुआ प्रबन्ध ही पुनः बहाल किया गया और मगना थानादार ही प्रथम अधिकारी अफसर (थानादार) नियत हुआ।

मगना थानादार १८४१-४५

मगना काल में लेह में किला, मगना हवेली, मगना बाग और अन्य मकानों का निर्माण किया गया।

रत्न वजीर के परामर्श से मालया का नया प्रबन्ध किया गया जो कि निम्नलिखित था।

रईसों व बड़े ज़मींदारों पर प्रतिघर दर्जा बार चौदह, पचीस और तीस रुपया वार्षिक लगान नियत हुआ, आम ज़मींदारों के भी तीन दर्जे गाता, फतमा और यान फतमा बनाए और इन पर सात, तीन और पौने दो रुपया वार्षिक लगान लगाया गया।

जहां ज़मीन अधिक उपजाऊ और दोफसली थी। वहां यही लगान आठ रुपया एक आना, चार रुपया एक आना और दो रुपया दो पैसा लगान का दर नियत हुआ।

पशुओं (भेड़ बकरी आदि) की भी संख्या अनुसार वार्षिक कर लगा कर पुरानी प्रथा बन्द कर दी।

महता बस्ती राम थानादार

१८४५ — १८५५

महता बस्ती राम ने भी निर्माण का काम जारी रखा। हवेली

बसती राम, लेह का बाजार, खजाना और अदालतों के भवन उसी के काल के हैं।

समाज सुधार में भी उस की रुचि थी। लद्दाखी बौद्धों में सभी भाई एक ही पत्नि से विवाह करते हैं। इस से जो कन्याएं कंवारी रह जाती थीं, वह या तो व्यभिचार में फंस जाती थीं, या गुम्फों में आश्रय ले लेती थीं। दोनों हालतों में उन की सन्तान बेसहारा और एक प्रकार से लावारस सी रह जाती थीं।

महता बस्ती राम ने ऐसे बच्चों और औरतों के लिये सरकारी रसद का प्रबन्ध कर के उन के प्रशिक्षण के लिए दस्तकारी केन्द्र खोल जहां दरियां, पट्टू तथा अन्य लाभदायक वस्तुएं तैयार करने का काम उनको सिखाया जाता। इन केन्द्रों का प्रबन्ध सरकारी अफसरों के अधीन होता था।

लद्दाख के राजों की भेड़-बकरियां ठेके पर चराई व पाली जाती थीं। इन ठेकेदारों के अलग कबीले थे। बसती राम ने इस प्रथा को बदल कर प्रति बकरी एक सेर माखन और एक सेर पशमीना तथा प्रति भेड़ एक सेर ऊन सालाना नियत कर दिया और सरकारी भेड़ बकरियों को चरवाहों के सुपुर्द कर दिया।

तिब्बत के साथ व्यापारिक सन्धि :-

सन् १८५१—

सन् १८४१ की सन्धि के अनुसार लद्दाखी लोग तिब्बत के व्यापारियों को बार बरदारी बेगार में देने के ज़िम्मादार थे। अब हालात बदल गए थे। तिब्बती व्यापारी चाय आदि नरम लाने लगे, ऊन आदि और स्थानों को ले जाने लगे। इस पर लद्दाखियों ने बेगार देना बन्द कर दिया।

लामा गुरु ने इस का विरोध किया। इस लिए सारे मुआमला को निपटाने के लिए महाराजा गुलाब सिंह की ओर से महता बसती राम और लामा की ओर से कालवन रेज्जन नियत किए गए। दोनों ने परस्पर परामर्श कर और तमाम हालात का अध्ययन कर निम्नलिखित सन्धि-पत्र तैयार किया और अपनी अपनी सरकार की ओर से उस पर हस्ताक्षर किए।

१. यह कि लहाखी लोग रहने के लिए मकान, नौकर चाकर और मामूली आवश्यकता की बार बरदारी तिब्बती व्योपारियों को बेगार देंगे।

२. यह कि तिब्बती व्योपारी चाय, ऊन आदि केवल लहाख में लावेंगे, अन्य स्थान को नहीं।

३. यह कि प्राचीन सीमा ही मान्य होगी। उस में कोई हस्तक्षेप न होगा।

४. यह कि रोदोक के लोग नमक, ऊन, ऊनी शाल, जौ और जौ के आटे पर कोई रोक न लगावेंगे।

५. यह कि चूंगी और बाजारी वस्तुओं का दर दोनों पार्टियां परस्पर परामर्श से नियत किया करेंगी।

६. रोंग के रास्ता से आने वालों को स्थानिक अधिकारी राहदारी का परवाना देगा। इस में दर्ज माल पर महसूल चूंगी लिया जायगा यदि कोई ऐसा माल हो जो राहदारी में दर्ज न हो तो उस पर पचास गुना जुर्माना लिया जायगा। और ऐसे मुकदमों में चूंगी अफसर का फैसला अन्तिम माना जायगा।

७. यह कि सरकार की ओर से नियत चरागाहों में व्योपारियों को माल चराने से रोक न जायगा। मगर कोई व्योपारी बाहिर से माल ला कर अनुचित लाभ न उठा सकेगा।

८. यह कि प्राचीन प्रचलित प्रथाओं का सदा ध्यान रखा जायगा। उन को तोड़ा न जायगा। परस्पर मित्रता बनाई जायगी। और इन शर्तों पर सख्ती से अमल किया जायगा।

महता मंगल थानादार

१८५५-६०

यह बहुत लोकप्रिय थानादार था। अब तक इस की बातें लोग सराहते हैं।

(क) इस ने ज़मीन का बन्दोबस्त करवा कर नई ज़मीन पर लगान लगाया और दोफसली ज़मीन पर लगान बढ़ा दिया। इस में कुछ और सुधार करके इसे स्थाई रूप दिया।

(ख) सिंचाई के लिए कई नहरें खुदवाईं।

(ग) किला को अधिक दृढ़ करने के लिए उस के चारों ओर खाई खुदवाई और उस की चार दीवारी का निर्माण कराया।

(घ) कई नई बस्तियां बसाईं। जैसे रणवीरपुर, रामपुर, प्रतापपुर, मंगलचक। इन में लोगों को आबाद किया। गुलाम जादो (आवारा स्त्रियों की संतान) को विशेष प्रोत्साहन दिया।

(ङ) इन को नई बस्तियों में बसाया। ज़मीनें दीं। सिंचाई कार प्रबन्ध किया। खेती के उपकरण दिए। लगान में रियायत दी। और इस प्रकार इन को सद्गृहस्त और जाति के लाभदायक अंग बनाने की चेष्टा की।

(च) लहासा, कश्मीर और कुल्लू जाने वाली सड़कों के किनारे किनारे दरखत लगवाए। कई स्थानों पर बाग बनाए। स्थान-स्थान पर पड़ाव बनवाए। मुसाफरखाने निर्माण कराए। सरायें बनवाईं। कई ग्रामों में भी ऐसे मकान बनवा दिए यहां यात्री आराम से रात व्यतीत कर सकें।

(छ) हर पड़ाओ पर बारबरदारी के प्रबन्ध के लिए आस पास के ज़िमीनदारों को बारी बारी से पड़ाव की यह ज़िम्मादारी दे दी। इस से सैर करने वाले और व्योपारियों को बहुत आसानी हुई। और व्योपार में विशेष वृद्धि हुई।

(ज) इस ने शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया। एक संस्कृत पाठशाला की स्थापना की। बच्चों को वज़ीफ़े दिए। गुलामजादों को विशेष प्रोत्साहन दिया कि वह शिक्षा प्राप्त कर सकें।

(झ) डाक का भी बाकायदा प्रबन्ध किया।

(ञ) लेह के बाज़ार का निर्माण जो महता बसती राम ने आरम्भ किया था, उसे पूरा किया। मण्डी के पास गुलाब बाग लगवा कर इसे और सुन्दर बनाया। सड़कों पर सफ़ाई के बहुत से वृक्ष लगवा दिए।

(ट) सरकारी कर्मचारियों के मुफ्त इलाज का प्रबन्ध कर दिया। एक हकीम रख कर सरकारी औषधालय जारी कर दिया।

वज़ीर शिव सरण :-

१८६०—६१

इस ने वज़ीर बाग बनवाया। जिस में यारकन्दी सराय, चरस गोदाम और मिशन हस्पताल व गिरजा-घर हैं।

वज़ीर सय्यद अकबर अली

१८६६—६६

अब थानादार का पद वज़ीर में बदल दिया गया था। अकबर अली ने अपने काल में जम्मु के कानून जारी किए और महाराज के नाम का सिक्का चालू किया।

मुसलमानों में विशेष कर स्त्रियों की पोशाक में सुधार किए।

और लोगों की शारीरिक सफाई और स्वास्थ्य रक्षा के लिए विशेष प्रयत्न किया ।

मिस्टर डल और भाई गंगारसिंह

यह वजीर और नायब वजीर थे । इन के समय में खेती बाड़ी में विशेष उन्नति हुई । नए मकान और बस्तियां बसा कर बाहिर के लोगों को वहां बसने का अवसर दिया ।

रियासत का प्रथम भूगोल और भूगर्भ विद्या पर भी इस ने पुस्तकें लिखीं ।

मिस्टर जानसन १८७१—८१

यह भी लोकप्रिय वजीर था । प्रातः सायं दरबार लगाता । इस में हर प्रकार के लोग जा सकते थे । वहां ही सभी झगड़ों के जबानी फैसले करता था ।

स्थान २ पर बाग लगवा कर और कई नहरें खुदवा कर तथा मालिया और लगान में कई सुधार कर इस ने अच्छा नाम पाया ।

टांची और रोपशों के जमींदारों से सरकारी तौर पर चरु लेने का प्रबन्ध किया । सरकारी भेड़ बकरियों का कर भी कैश लेना आरंभ किया । बलती व्योपारियों के लिए सराय बनवा कर उन के व्योपार को प्रोत्साहन दिया ।

कानकनी की ओर विशेष ध्यान दिया । थोगजे झील के पानी से नमक पर महसूल लगाया । महता मंगल ने नमक को सरकारी तौर पर कश्मीर भेजने का प्रबन्ध किया था । इसने शोरा कलमी, कोयला, इड़ताल, सोहागा, लोहा, सब्ज पत्थर, नीला थोथा, ताम्बा, शीशा आदि की कानों के काम की व्यवस्था की ।

व्योपार और खेती के काम में भी कई सुधार किए ।

रायबहादर पं० राधा किशन १८८४-८८

वजीर राधा किशन ने भी डाक आदि के प्रबन्ध में सुधार किया और लोगों की भलाई के बहुत से काम किए।

इस के पश्चात् खान बहादर सरदार मुहम्मद अकबर खान और चौधरी खुंशी मुहम्मद के समय में जन्सकार वगैरा इलाकों का बन्दोबस्त हुआ।

लेह :--

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, लेह में अच्छा बाजार और व्योपारियों के लिए कई सराएँ बनवा कर व्योपार को विशेष प्रोत्साहन दिया गया। चीनी तुर्कस्तान, तिब्बत, रूस और इधर भारत के व्योपारिक माल के आयात व निर्यात की यह मण्डी थी। चीनी तुरकस्थान से नमदे, रेशम व रेशमी कपड़े, कालीन, पशमीना यारकंद और बदखशां से घोड़े, चीन और रूस से चीनी के बर्तन, चांदी-सोना की मिटी, ऊनी फरशी सामान तथा भारत से गुड़, शक्कर, चीनी सूती कपड़ा, तिब्बत से चाय, मुशकनाफा, पशमीना, ऊन, चरु, पोस्तीनें, दरियां, पीतल ताम्बे के बर्तन, लद्दाख के खुशक मेवे और बलस्थानी शाल, पशमीना आदि सभी का आदान प्रदान लेह की मण्डी में होता था। इस पहाड़ी प्रदेश में जिस के नजदीक कई देशों की सीमाएं मिलती हैं, यह नगर एक विशेष स्थान माना जाता था।

लकड़ी की कमी ऊनी कपड़ों से पूरी की जाती थी। नालों पर पदम का वृक्ष—जिसे लद्दाख में पवित्र माना जाता है, और यत्रतत्र सफ़ेदा के वृक्ष मिलते हैं। १०।१५ हजार फुट की ऊंचाई पर वनस्पति

का अभाव है। नीचे मैदानी इलाकों में कुछ सब्जियां और खुमानी, अखरोट, सेब, अंगूर आदि फलों की पैदायश होती है। लकड़ी की जगह लीद काम में लाई जाती है।

खनिज पदार्थ :-

इस धरती में खनिज पदार्थ बहुत हैं। सोना तो दरियाओं की रेत से निकाला जाता है। मगर संचार के साधनों की कमी के कारण इन्हें निकाला नहीं जाता। गर्म पानी के चश्मों की भी कमी नहीं।

जानवर :-

जंगली भेड़, गधे और याक भी काफी हैं। चकोर, कबूतर और मुर्गाबी तथा दरियाओं में मछली काफी है। मगर देश में इन का शिकार करना और अक्राण हत्या करना बहुत बुरा समझा जाता है।

प्रथाएं :-

बौद्धों में जातपात और ऊंचनीच का भेदभाव नहीं माना जाता। बलस्थान की आबादी प्रायः शया मुसलमानों की है। ग्रामों में भी मुसलमान आबाद हैं। मुसलमानों और बौद्धों की मिली-जुली संतान अरगोन कहलाती है। इन के साथ भी भिन्नता का बरताव नहीं होता है।

परिवार में सम्पत्ति केवल बड़े लड़के को मिलती है। लड़कों के अभाव में अविवाहिता लड़की बड़ी छोटी क्रम से उत्तराधिकारी मानी जाती है। सन्तान विहीन दत्तक पुत्र भी ले सकता है जो सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होता है। पति को छोड़ कर या पति सहित भी यदि लड़की पिता के घर में आ कर बस जाए तो वह भी अपने क्रम से उत्तराधिकार प्राप्त करती है।

विवाह दो प्रकार का है। लड़की विवाह कर के सुसराल में जा रहे तो सभी भाइयों की सांझी पत्नि होगी। लड़का विवाह कर के सुसराल में जा रहे तो सभी बहिनों का सांझा पति होगा। यह प्रथा अब कानून विरुद्ध है। विशेष अवस्थाओं में तलाक़ देने का अधिकार दोनों को है। लड़की पिता के घर रहे तो पिता की सम्पत्ति की उत्तराधिकारी होगी और लड़का पिता के घर उत्तराधिकारी होगा। इस से उलट उत्तराधिकार का हक़ नहीं रहता। माता या पिता की पांच अथवा सात पीढ़ी तक परस्पर शादी विवाह नहीं किया जाता।

भूगोलिक अवस्था :--

आधुनिक लद्दाख

लद्दाख ज़िला का रकबा ४४००० वर्गमील सारे जम्मू कश्मीर राज्य के आधे से भी अधिक है। इस में लेह, करगल और असकरदू तीन तहसीलें हैं। असकरदू पर पाकिस्तान ने १९४७ से नाजायज़ अधिकार कर रखा है और ज़िला के एक भाग—अकसरईचिन पर चीन ने अधिकार जमा लिया है।

ज़िला की कुल आबादी ८८६५१ है। इन में ४४६७२ मर्द और ४३९७९ स्त्रियाँ हैं। इस में २५६ गांव हैं। लेह तहसील की आबादी २५००० और रकबा २६००० वर्ग मील है। इस में ११० गांव हैं। अर्थात् एक वर्गमील में एक आदमी भी नहीं।

प्राचीन काल में इसे कई नाम दिए जाते थे। जैसे तिब्बती भाषा में लाउवागस, मारयल, खाचमपाया (बर्फानी प्रदेश) फायहान के समय में यह मालोफो कहलाता था। इसे खोरतनों, मुन्थों और गोम्पाओं का प्रदेश या लामाओं की भूमि भी कहते हैं।

कभी यहाँ समुद्र था, जो सूख गया। यह प्रदेश बर्फ से ढका हुआ था। जा पिघलती गई और भूमि बनती गई। यह पर्वतीय शृंखलाओं से पटा पड़ा है जो दक्षिण-पूर्व से उत्तर पश्चिम को एक दूसरे के समानांतर पर स्थित हैं। इन में हिमालय, जन्सकार, लद्दाख, मस्तग और क्यूनलून पर्वतीय सिलसले प्रसिद्ध हैं।

सिन्ध दरिया इन पर्वतों की दिशाओं से घिरा बहता है। जन्सकार और शेवक नदियां इसी में आ कर मिलती हैं। स्थान स्थान पर कई नमकीन झीलें विद्यमान हैं। केवल सारंग और जलगालंग ताजे पानी की हैं।

उत्तर से दक्षिण तक मअटोगर, सारंग, जलगालंग, सीपंगर, पंगांग और सूमुरारी झीलों का कम है। पंगांग झील ४० मील लम्बी, ४ मील चौड़ी और १५० फुट गहरी सब से बड़ी है। सीपंगर सब से अधिक नमकीन है।

अकसईचिन :--

लमंगज टेंग और अकसईचिन बंजर हैं। १७, १८ हजार फुट ऊंचे स्थल हैं। कभी यह एक बड़ी झील थी, जिस का पानी बह जाने से यह खुशक हो गए। इस समय भी यहां दो झीलें हैं जिन में एक तो ६० वर्गमील में फैली हुई है।

यह प्रदेश अब चीनी कब्जा में है।

नसल पोशाक आचरण :--

दरदी और मोन लोग आर्य नसल के हैं जो कश्मीर के रास्ता यहां आ कर बसे मालूम होते हैं। तिब्बत की ओर से आ कर बसने वाले लोग मंगोल नसल के हैं।

स्त्रियां एक प्रकार का लहंगा जो कई रंगों का होता है, काले रंग



लहाखी वालिको अपने देशीय पहनावे में



एक लहाखी नव-युवक जिसने अपनी सेवाएं लहाख मलेशिया
के अर्पित कर रखी हैं ।

की वास्कट पहनती और भेड़ की खाल-ऊनी तरफ अन्दर रख कर ओढ़ती हैं। इस ओढ़नी को लोहे या पीतल के सूयों से बांध लेती हैं। पुरुष मोटे ऊनी चौंगे, सिर पर रुईदार टोपी, नमदे के-भेड़ के चमड़े के तले वाले-बूट पहनते हैं।

प्रायः लोग जौ का शोरबा, मक्खन, चाय, रोटी खाते पीते हैं। परिश्रमी हैं। स्वास्थ्य प्रायः अच्छा है क्योंकि सरल स्वभाव के हैं।

लोग प्रायः सत्यवादी हैं। चोरी, डाका, कतल बहुत कम होते हैं, लोग शान्ति प्रिय हैं। हंस मुख, प्रसन्न वदन, परिश्रमी और ईमानदार हैं। सर्दी के कारण शाररिक सफाई में बहुत कुछ सुधार की आवश्यकता है।

मजहब :-

प्रायः लोग बौद्ध हैं। कुछ मुसलमान और ईसाई भी हैं। परस्पर मेल-मिलाप और सहानुता की भावना से रहते हैं। एक ही परिवार में बौद्ध, मुसलमान और ईसाई प्रेम से रहते हैं। अपने पूर्वा को खूब नाच, गान, खेल तमाशों से प्रसन्नता से मनाते हैं। तीर अन्दाजी पोलो आदि के खेलों में बड़ी रुचि है।

गोम्पा, छोरतन, मनी :-

बौद्ध पूजा स्थान गोम्पा, छोरतन और मनी कहलाते हैं। गोम्पा बड़े पवित्र स्थान हैं। सारे जिला में १६ हैं, और केवल लेह तहसील में १० छोरतन और मनी नामक छोटे पूजा स्थान ग्राम २ में हैं। इनका अपना संगठन है। मुख्य लामा कौशक कहलाते हैं। यह सात हैं और वंश परम्परा से माने जाते हैं। यह विश्वास किया जाता है कि यह जीवन-मुक्त हैं। अतः मर कर पुनः कौशक ही बनते हैं।

जिला में १५००० लामा हैं, जो बौद्ध जनता का काफी बड़ा अंश है।

हेमस, मुस्तक, फियांग, लकर, रुगया और जीजांग गोम्पाओं में कौशक रहते हैं।

सड़कों :-

लद्दाख में सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है। लेह-करगल पक्की सड़क पर अब ट्रक और लारियां चलती हैं। यह सड़क १५३ मील है और कपी, गयाला और फतूला दर्रा से गुजरती है। यह दर्रे १२-१३ हजार फुट ऊंचे हैं। लेह को हेमस से भी पक्की सड़क द्वारा मिला दिया गया है। सड़कों के बन जाने से लद्दाख में आर्थिक और व्यापारिक उन्नति का रास्ता खुल गया है और लेह भारत के बड़े २ नगरों से मिल गया है।

बड़े ग्रामों को छोटी सड़कों (पगडंडियों) द्वारा बड़ी सड़क से मिला दिया गया है। दरियाओं और नालों पर उपयुक्त स्थानों पर पुल बना कर आने-जाने में सुगमता कर दी गई है।

हस्पताल, ग्रामों में डिस्पेंसरियां, स्कूल, डाकबंगलों के भवन निर्माण किए गए हैं। लेह-करगल सड़क पर कई रहायशी बंगले भी बन चुके हैं।

परिरक्षा विभाग, सामूहिक विकास विभाग और सरकारी भवन-विभाग अपने-अपने क्षेत्रों में कार्यशील हैं। सामावर्ती सड़क निर्माण योजना द्वारा अपना कार्य तेजी से किया जा रहा है।

वन-विभाग :-

इसने प्रदेश में विरोष कार्य किया है। लकड़ी का अभाव दूर करने के लिये पिछले १० वर्षों में १० लाख से अधिक वृक्ष लगाए गए हैं। लगभग डेढ़ सौ बाग निर्माण हुए हैं। इस से निजी क्षेत्रों में भी बाग लगाने तथा वृक्ष उपजाने को प्रोत्साहन मिला है। लगभग ८ सौ एकड़ भूमि में वृक्ष उपजाने का कार्य हुआ है।

वक्षों और बागों की रक्षा हित २८ मन कांटेदार तार लगाई गई और ५७ हजार मुकाब फुट दीवारें बनवाई गई हैं।

सिंचाई :-

सिंचाई के काम की ओर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। फियांग कूहल, रणवीर कूहल, नोबरा में एक कूहल, बियांग डंगदू कूहल और ठरशा कूहल की मुरम्मत करके तथा इनको अधिक चौड़ा करके अधिक लाभदायक बनाया गया है। जमीन पथरीली और रेतीली है अतः नहरों को सब ओर से सीमेंट से पलस्तर करने की आवश्यकता होती है। यह काम बहुत खर्चीला है। फिर भी इस समस्या का अध्ययन किया जा रहा है।

बिजली की शक्ति :-

आज बिजली की शक्ति के प्रयोग का युग है। लद्दाख में १५००० किलोवाट बिजली पैदा करने की योजना बनाई गई है। लेह में तो एक डीजल स्टेशन स्थापित भी किया जा चुका है। अब करगल और लेह में कुल चार पन बिजली-घर बनाए जाने की योजना है।

शिक्षा :-

बच्चों की शिक्षा तो मूल की बात है। राज्य की ओर से इस ओर विशेष प्रयत्न किया जा रहा है। इस समय इस जिला की दोनों तहसीलों—लेह और करगल में २१४ स्कूल हैं। इनमें ४ हाई स्कूल, २ लोअर हाई, ६ मिडल, १८ सैण्ट्रल, १६२ प्राइमरी स्कूल हैं। १७ मुदरसे और पाठशाला भी चल रही हैं। लेह और करगल में अध्यापक प्रशिक्षण श्रेणियां (B. E. C. Training Classes) भी जारी हैं, जहां पुरुष और स्त्रियां प्रशिक्षण पा रही हैं। गश्ती और बेसिक स्कूल खोलने की भी योजना है।

गरीब और होनहार बच्चों को बजीफे दिए जाते हैं। सीमा प्रदेश में ३० रुपये तक के २५० वजीफे दिए जा रहे हैं। राज्य के कालजों

में ६५ लक्षांश विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। इन्हें २५ से ५० रुपया मासिक तक की सहायता दी जा रही है।

१२ विद्यार्थी मेडिकल, इन्जीनियरिंग, एग्रीकल्चरल और लालकालों में सरकारी वजीफों पर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। एक तो M. B. B. S. बन कर लक्षांश हस्पताल में डाक्टर भी लग गया है।

सन् १९६३ में ४६६३ लड़के और ७३८ लड़कियां शिक्षा ग्रहण कर रही थीं।

स्वास्थ्य :-

भारत लोक-राज्य है। जनता की भलाई इसका मुख्य कर्तव्य है। अतः अन्य बातों के साथ-२ जनता के स्वास्थ्य की तरफ भी राज्य का ध्यान रहता ही है।

इस कार्य के लिए लेह और करगल में बड़े हस्पताल हैं और अब लेह में एक बहुत बड़ा फौजी हस्पताल भी चालू हुआ है। इन में आधुनिकतम उपकरण मौजूद हैं और हर प्रकार के ओपरेशन तथा दवाइयों का प्रबन्ध है।

बड़े-बड़े ग्रामों में डिस्पेंसरियां और औषधालय खोले गए हैं। कई स्थानों पर स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित हैं।

डाक्टरी प्रशिक्षण के लिए योग्य लक्षांशियों को भारत के भिन्न-२ मेडिकल कालजों में सरकारी वजीफा पर भेजा गया है। कम्पौंडर, सैनीटरी इन्स्पेक्टर, नर्स और दाई के कामों के प्रशिक्षण का प्रबन्ध लेह में किया गया है।

भोज्य पदार्थ और अनाज :-

लेह की जल-वायु में गिरम, जौ और गंदम के सिवा कोई अन्य पैदा नहीं होता। इनकी पैदावार भी ढाई लाख मन से अधिक न

श्री । अतः खाने के अन्न की समस्या एक स्थाई समस्या है । इसकी कमी सदा कश्मीर से पूरी की जाती है ।

सरकार चार-पांच लाख रुपया वार्षिक व्यय करके कश्मीर से सहस्रों मन अनाज हवाई जहाजों द्वारा यहां भेजती रही है ।

बिचवती व्यापार बन्द हो जाने से नमक भी भारत से भेजा जाता है ।

गत वर्ष ४००० मन चावल ८३२० मन गंदम, १६०० मन नमक, २००० मन तेल भारत और कश्मीर से भेजा गया और भिन्न २ वितरण केन्द्रों से जनता को सस्ते भाव पर दिया गया ।

इस प्रकार भारत सरकार हर तरह से लद्दाख के पिछड़ेपन को दूर करने का प्रयत्न कर रही है ।

जनरल जोरावर सिंह सम्बन्धी कुछ लोक-गाथाएँ

(क) सन् १८३४ में जब वजीर जोरावर सिंह को लद्दाख विजय करने भेजा गया तो महाराजा गुलाब सिंह ने कहा कि “हमारा वीर जरनैल जोरावर सिंह जा रहा है, इस लिए लद्दाख की विजय अवश्य होगी ।”

एक वजीर पास था, उसे ईर्ष्या थी । उसने दबी आवाज में कहा—
“हां जी, जोरावर सिंह तो न्योले लाद कर लायगा..... ।”

यह बात जोरावर सिंह ने भी सुनी और महाराज गुलाब सिंह ने भी सुनी मगर उस समय इस पर अधिक ध्यान न दिया गया ।

वजीर जोरावर सिंह ने यह बात मन में रखी । जाते समय कंडोली नगरोटा से कुछ न्योले के बच्चे पकड़वा कर पाल लिए । वह उस से बहुत हिल-मिल गए और आगे पीछे फिरते रहते ।

उनकी पीठों पर छोटे २ पत्थर बांध कर उनको पत्थर उठाने का अभ्यास कराया गया ।

जब जोरावर सिंह वापस आया तो महाराज उसे नगरोटा में आगे जा कर मिले और “जै देवा” कह कर अपना चौथा भाई कह कर सम्बोधित किया ।

जब महाराज की दृष्टि न्योलों पर पड़ी तो देख कर मुस्कराए कि उन पर जरी की गुत्थियों में हीरे जवाहरात लदे थे ।

उस ईर्षालू वजीर की तरफ मुख करके महाराज ने कहा—
“वजीर जी न्योले लदे आ गए हैं ।”

वजीर शरमिंदा हो कर रह गया ।

— — — —

(ख) महाराज गुलाब सिंह ने उसे अपना चौथा भाई कह कर सम्बोधित किया था । जोरावर सिंह ने इसे प्रमाण माना ।

उसी दिन से अपना वेतन लेना बन्द कर दिया और रियासी की निजी सम्पत्ति वहां ही सरकारी खजाना में जमा करा दी । लहाख से जो भेटें और तोहफे मिले थे वह भी सरकारी खजाना में दाखिल कर दिए ।

स्वयं एक त्यागी वीर योद्धा और राजभक्त का जीवन धारण कर लिया ।

मृत्यु के समय उसके पास अपनी कोई वस्तु न थी । उसकी रयासी वाली सम्पत्ति बाद में महाराजा प्रताप सिंह ने उसके वंशज ईशरी सिंह को वापिस की थी ।

(ग) फौजी गुदाम से केवल वही भोजन लेता जो आम सिपाहियों को मिलता था । अपनी वर्दी भी आपन लेता था ।

लदाख में उसे पहनने की पोशाकें जम्मू से ही महाराजा गुलाब सिंह भेजा करते थे ।

(ब) रयासी में जब जोरावर सिंह हाकम था तो उसके पास कुछ रहेले सिपाही थे । एक सिपाही रयासी के नम्बरदार शिव राम के पूर्वज के पास लगान वसूल करने गया । वह खाना खा रहा था । रहेला सिपाही ने उसे गौ की कसम दे कर कहा कि पहले लगान देकर खाना खाओ ।

राजपूत यह सहन न कर सका । भट तलवार निकाल कर सहेते को मौत के घाट उतार दिया और आप भाग कर अपने मामा के वहां जाकर छिप गया ।

जोरावर सिंह ने उसे पकड़ने के लिए इनाम की घोषणा की । इनाम के लालच में उसके मामा ने उसे कतल कर, उसका सिर लाकर जोरावर सिंह के पास पेश कर दिया ।

जोरावर सिंह ने इसे अपनी परम्परा के विरुद्ध जाना कि एक शरणागत की इनाम के लालच में हत्या की गई है ।

उसने सिर लाने वाले (मामा) को मौत का दंड दिया और रयासी के पैरेड के मैदान में उसे बुरी तरह मरवा दिया गया ।

कानून किसी को भी यह अधिकार नहीं देता कि वह आप ही किसी को मन माना दंड दे । फिर शरणागत का मारना तो महापाप है ही ।



THE FIRST PART OF THE HISTORY OF THE
LIFE OF KING CHARLES THE FIRST

BY SAMUEL JOHNSON
IN TWO VOLUMES
THE FIRST
LONDON: Printed by A. MILLAR, in Pall-mall, 1739.

IN TWO VOLUMES
THE SECOND
LONDON: Printed by A. MILLAR, in Pall-mall, 1739.

IN TWO VOLUMES
THE THIRD
LONDON: Printed by A. MILLAR, in Pall-mall, 1739.

IN TWO VOLUMES
THE FOURTH
LONDON: Printed by A. MILLAR, in Pall-mall, 1739.

IN TWO VOLUMES
THE FIFTH
LONDON: Printed by A. MILLAR, in Pall-mall, 1739.

IN TWO VOLUMES
THE SIXTH
LONDON: Printed by A. MILLAR, in Pall-mall, 1739.

IN TWO VOLUMES
THE SEVENTH
LONDON: Printed by A. MILLAR, in Pall-mall, 1739.

